सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 131, नई दिल्ली । सोमवार, 22 जुलाई 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

यह मत सोचो कि मुझसे नहीं हो पाएगा, बल्कि ये सोचो कि मेरे अलावा कर कौन पाएगा।

03 मॉब लिंचिंग एवं ग़ैर क़ानूनी बुल्डोज़र नीति पर लगाम लगाने की मांग
06 क्या बजट दीवार पर लिखी चेतावनियों का जवाब देगा
08 गुरू के बिना ज्ञान की रोशनी भी अधूरी : वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान

दिल्ली मेट्रो में टोकन-कार्ड लेने का झंझट खत्म

स्मार्टफोन पर क्यूआर कोड स्कैन कर ले सकेंगे टिकट

दिल्ली मेट्रो के यात्री जल्द ही स्मार्ट कार्ड की तरह अपने स्मार्टफोन पर क्विक रिस्पॉन्स कोड (QR Code) का इस्तेमाल करके यात्रा कर सकेंगे। डीएमआरसी के इस शानदार कदम से यात्रियों को टिकट के लिए लंबी लाइन में लगने से छुटकारा मिलेगा। डीएमआरसी जल्द ही यात्रियों के लिए क्यूआर कोड आधारित टिकट की सुविधा शुरू करेगा। इससे यात्रियों को मेट्रो के सफर का नया अनुभव मिलेगा।

संजय बाटला

नई दिल्ली। दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डीएमआरसी) ने मेट्रो में यात्रा करने वाले लोगों को बड़ी राहत दी है। अब यात्रियों को टोकन या स्मार्ट कार्ड के लिए लंबी लाइन में नहीं लगना होगा। यात्री चंद सेकंड्स में अपने स्मार्टफोन पर क्यूआर कोड स्कैन कर टिकट प्राप्त कर सकेंगे। यह स्मार्ट कार्ड की तरह ही काम करेगा। इससे लोगों का का मेट्रो का सफर आसान होगा। डीएमआरसी के अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी।

कहां मिलेगी ये सुविधा?

इस संबंध में डीएमआरसी के प्रबंध निदेशक विकास कुमार ने समाचार एजेंसी पीटीआई को बताया, ‘हम टिकट के लिए क्यूआर शुरू करने की योजना बना रहे हैं। यह एक कार्ड की तरह होगा जो एक ही यात्रा के लिए प्रतिबंधित नहीं होगा।

इससे कागज के प्रिंट की संख्या भी कम हो जाएगी। यह सुविधा उन सभी प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध होगी जो वर्तमान में डीएमआरसी क्यूआर टिकट प्रदान करते हैं।”

हर बार नहीं पड़ेगी टिकट खरीदने की जरूरत

डीएमआरसी के अनुसार, नई प्रणाली यात्रियों को आवश्यकतानुसार मोबाइल एप पर अपने क्यूआर वॉलेट को टॉप अप करने में सक्षम बनाएगी, जिससे प्रत्येक यात्रा के लिए एक नया क्यूआर टिकट खरीदने की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। अधिकारी ने कहा कि यह सुविधा भौतिक पास या टिकट ले जाने की आवश्यकता को समाप्त कर देगी।

यात्री अमेजन पे पर दिल्ली मेट्रो क्यूआर टिकट विकल्प का चयन कर सकते हैं और अपने स्टेशन चुन सकते हैं, भुगतान कर सकते हैं और तुरंत मोबाइल क्यूआर टिकट प्राप्त कर सकते हैं। बता दे कि इस महीने की शुरुआत में, डीएमआरसी ने अमेजन पे पर मोबाइल-आधारित क्यूआर टिकट पेश किए थे।

कांवड़ यात्रा 2024 : उत्तराखंड और दिल्ली जाने वाले यात्रियों के लिए, सोमवार से बंद हो जाएगा रुड़की मुजफ्फरनगर मेरठ मार्ग

सोमवार को कांवड़ यात्रा के चलते दिल्ली मार्ग पर जाने वाली परिवहन निगम की बसें निर्धारित रुड़की–मुजफ्फरनगर–मेरठ–मुरादनगर मार्ग से नहीं बल्कि गागलहेड़ी–सहारनपुर एक्सप्रेस–वे से यमुनानगर–करनाल–सोनीपत मार्ग होकर दिल्ली जाएंगी।

नई दिल्ली। परिवहन निगम के अधिकारियों ने बताया कि हरिद्वार व ऋषिकेश से दिल्ली की ओर जाने वाली बसों को पहले बिजनौर मार्ग से भेजा जाएगा, लेकिन यदि इस मार्ग पर भीड़ बढ़ती है तो ऋषिकेश व हरिद्वार की तरफ से दिल्ली जाने वाली बसें भी सहारनपुर एक्सप्रेस-वे से यमुनानगर होते हुए जाएंगी। यह बसें पहले देहरादून आएंगी और यहां से परिवर्तित मार्ग पर जाएंगी। दूरी होने के चलते बसों के किराये को बढ़ा दिया गया है। जिसके लिए ई-टिकट मशीनों को अपडेट किया जा रहा है।

बता दें कि कांवड़ यात्रा के चलते रुड़की-मुजफ्फरनगर-मेरठ-दिल्ली मार्ग कल यानी सोमवार से बंद हो जाएगा। इसके लिए परिवहन निगम ने पहले ही तैयारी कर ली थी। उत्तराखंड परिवहन निगम के महाप्रबंधक संचालन दीपक जैन ने सभी डिपो के एजीएम को आदेश दिया गया है कि कांवड़ यात्रा में पुलिस-प्रशासन की तरफ से परिवर्तित किए गए मार्गों पर ही बसों का संचालन किया जाए।

वर्तमान में देहरादून, हरिद्वार व ऋषिकेश से जाने वाली समस्त बसों को निर्धारित मार्ग रुड़की-मुजफ्फरनगर-मेरठ होकर दिल्ली भेजा जा रहा है, लेकिन रविवार की मध्य रात्रि से इस मार्ग का यातायात परिवर्तित कर दिया जाएगा। आदेश दिए गए हैं कि निर्धारित मार्ग पर अगर कांवड़ यात्रियों की भीड़ अधिक होती है तो रविवार देर रात्रि की बसों को भी परिवर्तित मार्ग से ही दिल्ली भेजा जाए।

निर्धारित मार्ग पर दून-दिल्ली की दूरी 258 किमी है, जबकि परिवर्तित मार्ग पर यह दूरी बढ़कर 317 किमी हो जाएगी। दूरी में आए 59 किमी के अंतर से परिवहन निगम की बसों का किराया भी बढ़ जाएगा। दिल्ली समेत गुरुग्राम, जयपुर, फरीदाबाद, अलवर, आगरा जाने वाली बसें भी परिवर्तित मार्ग से ही संचालित की जाएंगी। मार्ग परिवर्तन शिवरात्रि यानी दो अगस्त तक लागू रहेगा। परिवर्तित मार्ग पर बढ़े किराये के साथ तकरीबन डेढ़ से दो घंटे का अतिरिक्त समय भी लगेगा।

कांवड़ के दौरान परिवर्तित मार्ग सहारनपुर एक्सप्रेस-वे-यमुनानगर-करनाल मार्ग पर टोल भी अधिक हैं और इसकी दूरी भी अधिक होगी। ऐसे में देहरादून से दिल्ली जाने वाली वोल्वो बसों का किराया 75 रुपये से 80 रुपये तक बढ़ सकता है।

वर्तमान में दून-दिल्ली वोल्वो बस का किराया 945 रुपये है, जो परिवर्तित मार्ग पर बढ़कर 1025 रुपये तक हो सकता है। वहीं, एसी जनरथ बस किराया 65 रुपये, जबकि साधारण बस का 55 रुपये तक बढ़ सकता है। वर्तमान में एसी बस का किराया 562 रुपये, जबकि साधारण बस का किराया 420 रुपये है।

भारत देश की न्यायप्रणाली और जनता से सवाल?

अगर मारुति अपने कार पर बीएमडब्ल्यू का लोगो लगाकर बेचे तो यह गैरकानूनी है

अगर कोई लोकल मसाले वाला अपने मसाले पर दूसरा नाम लगाकर मसाला बेचे तो यह गैर कानूनी है

अगर आप किसी और के गाए हुए गाने को गाते हैं तो आपके ऊपर कॉपीराइट एक्ट में केस दर्ज होगा

यदि कोई चाइनीज मोबाइल कंपनी अपने मोबाइल पर सैमसंग लगाकर बेचे तो यह गैर कानूनी है

लेकिन भारत में अब्दुल अगर अपने दुकान पर रमेश का लेवल लगाकर सामान बेचे तो कानून में इसे क्या कहेंगे?

बस और कार ऑपरेटर्स कन्फेडरेशन ऑफ इंडिया (सीएमवीआर समिति) के नेतृत्व में मुख्य सलाहकार मुख्यमंत्री के साथ परिवहन मुद्दो पर बैठक संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के मुख्य सलाहकार श्री अवनीश कुमार अवस्थी के साथ हुई बस और कार ऑपरेटर्स कन्फेडरेशन ऑफ इंडिया (सीएमवीआर समिति) के नेतृत्व में सफल बैठक। गुरमीत सिंह द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया

परिवहन मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार से आज निम्नलिखित मुद्दों के संबंध में सचिव परिवहन, आयुक्त परिवहन, और परिवहन विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी के समक्ष सफल बातचीत सम्पन्न हुई

1. फेसलेस एवं ऑनलाइन सेवाओं की आवश्यकता
2. सीसी परमिट की आयु 12 वर्ष से 15 वर्ष तक
3. राज्य स्तरीय फिटनेस.
4. स्कूल बसों का जीवन
5. अस्थायी परमिट में परिवर्तन की सुविधा
6. एनसीआर काउंटर हस्ताक्षर
7. एसी बसों का टैक्स नॉन एसी बसों के बराबर किया जाए।
8. टोल टैक्स दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे हैं और इसका बोझ आम आदमी पर पड़ रहा है, इसलिए हम यूपी सरकार से अनुरोध करते हैं कि टैक्स में और बढ़ोतरी न की जाए,

गुरमीत सिंह तनेजा चेयरमैन
सीएमवीआर कमेटी

बस और कार ऑपरेटर्स कन्फेडरेशन ऑफ इंडिया (सीएमवीआर समिति) के नेतृत्व में परिवहन मंत्री के साथ परिवहन मुद्दो पर हुई बैठक संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्रीय मोटर वाहन नियम (सीएमवीआर) के तहत फेसलेस और ऑनलाइन सेवाओं की आवश्यकता के संबंध में परिवहन मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार और परिवहन विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ हुई सफल बैठक। बैठक में दयाशंकर, माननीय परिवहन मंत्री, भारत सरकार। यूपी के श्री लक्को वेंकटेश्वरलू (आईएएस) प्रमुख सचिव परिवहन, श्री चंद्र भूषण सिंह (आईएएस) आयुक्त परिवहन, आरटीओ मुख्यालय, आरटीओ आईटी और यूपी के परिवहन विभाग के अन्य अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक के दौरान पर्यटक परमिट नवीनीकरण के लिए ओटीपी प्राप्त न होने और नवीनीकरण और फिटनेस प्रक्रियाओं में कदाचार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को प्रस्तुत करने और संबोधित करने के लिए पर्याप्त समय था।परिवहन सचिव श्री लक्को वेंकटेश्वरलू (आईएएस) प्रिंसपाल ने आरटीओ मुख्यालय और आरटीओ आईटी को समयबद्ध तरीके से आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। उन्हें ऑनलाइन सेवाओं के कार्यान्वयन के लिए एनआईसी को संबोधित पत्र की एक प्रति साझा करने की भी सलाह दी।

दिल्ली में पल्यूशन सर्टिफिकेट में 86 फीसदी की आई कमी, डीपीडीए ने की पीयूसी दर वृध्दि वापस की मांग

परिवहन विशेष। एसडी सेठी

राजधानी दिल्ली में दम घोटू पर्यावरण पर नियंत्रण करने की गर्ज से गाडियों के लिए पल्यूशन अंडर कंट्रोल सर्टिफिकेट लेना जरूरी है। लेकिन दिल्ली पैट्रोल डीलर्स एसोसिएशन (डीपीडीए) ने यह दावा कर दिल्ली सरकार की पर्यावरण के प्रति गंभीरता की असलियत सामने ला दी है।एसोसिएशन का कहना है कि पल्यूशन अंडर कंट्रोल सर्टिफिकेट बनवाने के मामले में 86 फीसदी की कमी आई है। इसके लिए दिल्ली सरकार की ओर से पल्यूशन अंडर कंट्रोल (पीयूसी) सर्टिफिकेट बनवाने की दरों में बढोतरी से नाखुश दिल्ली पैट्रोल डीलर्स एसोसिएशन (डीपीडीए) ने 15 जुलाई से दिल्ली में सभी पीयूसी जांच सेंटर बंद कर दिए है। एक तरह से हडताल पर चले गए है। इस बावत दिल्ली पैट्रोल डीलर्स एसोसिएशन की ओर से प्रेस को जारी विज्ञप्ति के मुताबिक

दिल्ली में पिछले साल 2023 में कुल 53.98 लाख पीयूपी सर्टिफिकेट बने थे। औसतन एक दिन में लगभग 15 हजार प्रमाण पत्र बनाए गए। इसी तरह से इस साल जुलाई के 14 दिनों में औसतन रोजाना 12,602 पीयूसी सर्टिफिकेट बने।लेकिन 15 जुलाई से कई पैट्रोल पंपों पर इसकी जांच बंद होने के बाद 15 से 19 जुलाई के बीच औसतन हर रोज सिर्फ 1781 पीयूसी प्रमाण पत्र ही बने है। इस बावत दिल्ली पैट्रोल डीलर्स एसोसिएशन ने लोगों द्वारा पल्यूशन सर्टिफिकेट बनवाने में कमी का हवाला देते हुए दिल्ली सरकार से पीयूसी दर वृद्धि पर अपना फैसला वापस लेने की मांग की है।उल्लेखनीय है कि एसोसिएशन का कहना है कि 2011 के बाद से पीयूसी सर्टिफिकेट बनाने के रेट नहीं बढाए गए। जबकि बीते 13 सालों में लोगों के वेतन में करीब 300 फीसदी की बढोतरी हो चुकी है। लेकिन पीयूसी सर्टिफिकेट की दर नहीं बढाई गई है। बता दें कि बडे हुए पीयूसी सर्टिफिकेट जांच दरो के मुताबिक दो पहिये वाहन का 150 रूपये, चार पहिया वाहनों का 200 रूपये डीजल वाहनों का 300 रूपये तीन महीने की मियाद के लिए तय किए गए है। जांच केंद्र बंद होने से पीयूसी जांच सर्टिफिकेट के चला रहे वाहन मालिको के धडाधड चालान काटे जा रहे है।

आज आपका अपना ऑटो टैक्सी यूनियन दिल्ली सचिवालय पार्किंग से अवैध वाहनों जैसे प्राइवेट बाइकों और अवैध ऐप कंपनियों जैसे ओला,उबेर, इन ड्राइव, रैपीडो के खिलाफ पोस्टर जारी कर किया विरोध।ये अवैध कंपनियां हमारे ऑटो टैक्सी चालकों के रोजगार को छीनने का कार्य कर रही हैं।हम सभी ऑटो टैक्सी चालक इसका विरोध करते हैं और ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट के आला अधिकारियों से मांग करते हैं इन अवैध कंपनियों के कार्यवाही करें। उपेन्द्र सिंह, (महासचिव)

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

दिल्ली के सबसे फेमस ढाबे, इनके आगे मुरथल ढाबा कुछ भी नहीं, जानें कहां पर स्थित है?

वैसे तो मुरथल के ढाबे अपने व्यंजनों के लिए सबसे ज्यादा फेमस हैं। दिल्ली के लोग भी इन ढाबा का स्वाद चखने के लिए मुरथल जाते हैं। विशेषकर वीकेंड पर इन ढाबों पर दिल्ली के लोगों की खासी भीड़ रहती है। आइए जानते हैं दिल्ली के सबसे फेमस ढाबे।

दिलवालों की दिल्ली में सबसे ज्यादा लोग खाने-पीने के शौकीन होते हैं। स्वाद चखने के लिए दिल्ली के लोग किसी भी जगह पर पहुंच जाते हैं।वहीं, सोनीपत के मुरथल स्थित ढाबे भी दिल्ली के लोगों को खासे पसंद हैं। तो चलिए बिना देर किए आपको बताते हैं दिल्ली के बेहतरीन ढाबों के बारे में...

सफदरजंग एन्क्लेव स्थित राजिंद्र दा ढाबा

दिल्ली के सफदरजंग एन्क्लेव में स्थित डीडीए मार्केट में फेमस राजिंद्र दा ढाबा है, यहां पर लोग नॉन वेज के व्यंजनों का स्वाद चखने के लिए दूर-दूर से आते हैं। इस ढाबे की मखमली मछली, गौलौती कबाब, चिकन बुराह और सती किचन इनकी विशेषताएं हैं। बटन नान इतनी मखमली होती है कि मुंह में रखते ही घुल जाती है। यदि आप सफदरजंग एन्क्लेव जा रहे हो, तो एक बार यहां खाना जरुर ट्राई करें

कुंदन ढाबा, करोल बाग

करोल बाग में देव नगर के पदम सिंह रोड़ पर कुंदन ढाबा मौजूद है। इस ढाबे पर ग्राहकों की भीड़ जुटी रहती है। विशेषकर छुट्टी के दिन तो यहां लंबी लाइन लगी रहती है। छुट्टी वाले दिन तो काफी भीड़ होती है। यहां पर शाकाहारी और मांसाहारी दोनो ही प्रकार को भोजन परोसे जाते हैं। नॉन वैज में तंदूरी चिकन, बटर चिकन और कबाब बहुत फेमस है, वहीं वैज की बात करें तो दाल मखनी और राजमा चावला सबसे ज्यादा डिमांड में रहते हैं। इसके साथ ही यहां अन्य व्यंजन काफी टेस्टी हैं जिसने पहली बार खाया है, वह बार-बार आने से खुद को रोक नहीं पाएंगे।

करोल बाग का प्रेम ढाबा

दिल्ली के करोल बाग में स्थित प्रेम ढाबा बेहद फेमस है। यह ढाबा न्यू रोहतक रोड पर ब्लॉक डी में है, यहां पर नॉन वेज और वेज व्यंजन परोसे जाते हैं। ग्राहकों को यहां की दाल मखनी भी बेहद प्रसिद्ध है। इसके साथ ही, शाही पनीर, कढ़ाई पनीर और पनीर बटर मसाला का भी स्वाद चख सकते हैं। अगर आप मांसाहारी के शौकीन हैं, तो यहां की चिकन करी, मटर करी आर्डर कर सकते हैं, जिसका स्वाद आप कभी नहीं भूल पाएंगे।

दिल्ली 6 की काके दी हट्टी

चांदनी चौक, दिल्ली 6 मे काके दी हट्टी है सबसे ज्यादा फेमस है, यह देश कि सबसे बड़ी नॉन वेज परोसने वाला ढाबा है। बता दें कि काके दी हट्टी ढाबा करीब 4 जेनरेशन से लोगों को अपने व्यंजनों के टेस्ट को परोस चुका हैं। यहां की सबसे फेमस धुआंधार नान, आलू प्याज नान, पनीर नान के साथ ही अमृतसरी थाली भी सबसे बढ़िया है। अगर आपने यहां के जायके का स्वाद नहीं लिया है तो एक बार जरुर जाए

छतरपुर का अजीत खालसा ढाबा

छतरपुर में स्थित अजीत ढाबा काफी फेमस है। दरअसल, यह ढाबा टिवोली गार्डन के ठीक सामने छतरपुर रोड पर है। बता दे कि, यह ढाबा करीब 40 सालों से चल रहा है, उतना ही इसका असाधारण व्यंजन है। ज्यादातर फूड ब्लॉगर मानते है कि दिल्ली के टॉप ढाबों की बात की जाए तो छतरपुर का अजीत खालसा ढाबा सबसे ऊंचे स्थान पर है।

शेविंग क्रीम को इन तरीकों से भी किया जा सकता है इस्तेमाल, जानें

शेविंग क्रीम की मदद से कालीन से लेकर कपड़े के दाग आसानी से हटाए जा सकते हैं। कालीन पर लगे दाग हटाने के लिए उस पर शेविंग क्रीम लगाएं। इसे कुछ मिनट तक लगा रहने दें और फिर गीले कपड़े से पोंछ लें।

अगर मैं आपसे पूछूं कि शेविंग क्रीम का इस्तेमाल किसलिए किया जाता है, तो यकीनन आप यही कहेंगे कि इससे शेविंग की जाती है। यह सच है कि शेविंग क्रीम की मदद से आप अनचाहे बालों से आसानी से छुटकारा पा सकते हैं। लेकिन इसके फायदे सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं है। अगर आप चाहें तो शेविंग क्रीम का इस्तेमाल कई अलग-अलग तरीकों से भी कर सकते हैं।

यह आपके घर की क्लीनिंग से लेकर ज्वैलरी की केयर करने तक काफी चीजों में मददगार हो सकता है। आप शेविंग क्रीम की मदद से घर के कई छोटे-छोटे काम आसान बना सकते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको शेविंग क्रीम को इस्तेमाल करने के आसान तरीकों के बारे में बता रहे हैं-

हटाए दाग

शेविंग क्रीम की मदद से कालीन से लेकर कपड़े के दाग आसानी से हटाए जा सकते हैं। कालीन पर लगे दाग हटाने के लिए उस पर शेविंग क्रीम लगाएं। इसे कुछ मिनट तक लगा रहने दें और फिर गीले कपड़े से पोंछ लें। इसी तरह कपड़ों पर लगे कॉफी, चाय या खाने आदि के दाग हटाने के लिए उस पर शेविंग क्रीम लगाएं। फिर उसे लगा रहने दें और फिर हमेशा की तरह धो लें।

बाथरूम की करें सफाई

बाथरूम की अलग-अलग सतहों जैसे सिंक, नल और शॉवर आदि का क्लीन करने के लिए शेविंग क्रीम का इस्तेमाल किया जा सकता है। इन जगहों पर अक्सर साबुन के मैल लगे रह जाते हैं। लेकिन शेविंग क्रीम इन दागों को हटाने में मदद करता है और चमक देता है। बाथरूम में लगे मिरर को क्लीन करने के लिए भी शेविंग क्रीम का इस्तेमाल किया जा सकता है।

चांदी की ज्वैलरी करें साफ

चांदी की ज्वैलरी को समय-समय पर साफ करने की जरूरत पड़ती है, क्योंकि वह समय क साथ काली पड़ने लगती है। ऐसे में उसे फिर से साफ करने के लिए आप शेविंग क्रीम का इस्तेमाल करें। इसके लिए ज्वैलरी पर शेविंग क्रीम लगाएं और फिर उसे कुछ देर के लिए छोड़ दें। फिर उसे पानी से धो लें। जब ज्वैलरी सूख जाए, तो आप उसे एक बार पेपर टॉवल पर लपेटकर रखें। आप देखेंगे कि चांदी की ज्वैलरी फिर से नई जैसी लग रही है।

क्या आपकी भी स्किन वैक्सिंग कराने के बाद होती है डैमेज? तो इन बातों का रखें ख्याल

अगर आप घर में वैक्सिंग करते हैं तो आपको कुछ बातों का खास ध्यान रखना चाहिए ताकि स्किन डैमेज न हो और इस लेख में हम आपको टिप्स बताने जा रहें, इन्हें फॉलो जरुर करें। कई महिलाएं घर पर ही वैक्सिंग करती हैं लेकिन घर पर वैक्सिंग करने के दौरान कुछ बातों का खास ध्यान रखना चाहिए ताकि स्किन डैमेज न हो।

अनचाहे बाल पैरों और हाथों की खूबसूरती को कम कर देते हैं। वहीं इनकी सुंदरता में बनाए रखने के लिए महिलाएं वैक्सिंग का सहारा लेती हैं। महिलाएं ब्यूटी पार्लर में जाकर वैक्सिंग करवाती हैं लेकिन ये काफी खर्चीला होता है। वहीं इस दौरान कई महिलाएं घर पर ही वैक्सिंग करती हैं लेकिन घर पर वैक्सिंग करने के दौरान कुछ बातों का खास ध्यान रखना चाहिए ताकि स्किन डैमेज न हो। वहीं इस आर्टिकल में हम आपको इसी बातों का खास ध्यान रखना चाहिए। चलिए आपको बताते हैं किन बातों का रखना है ध्यान।

क्वालिटी का रखें ध्यान

वैक्सिंग करते समय इस बात का ध्या रखें कि वैक्स की क्वालिटी अच्छी ही ताकि इसका इस्तेमाल करने से स्किन से जुड़ी कोई समस्या पैदा न हो। वहीं वैक्स की क्वालिटी का हमेशा ध्यान रखें, क्योंकि इससे स्किन डैमेज नहीं होगी।

पाउडर का करें इस्तेमाल

कई महिलाओं की स्किन सेंसिटिव होती हैं। वहीं गर्म वैक्सिंग को हाथ -पैरों पर लगाने से पहले आप पाउडर का इस्तेमाल करें, क्योंकि वैक्सिंग की वजह से स्किन डैमेज हो जाती है। पाउडर के यूज से त्वचा पर नमी नहीं रहती और वैक्सिंग के बाद किसी भी तरह परेशानी नहीं आती है।

अच्छी स्ट्रिप्स का यूज करना

अगर आप घर में वैक्सिंग करती हैं तो डिस्पोजेबल स्ट्रिप्स का इस्तेमाल कर सकते हैं। कई बार महिलाएं एक ही स्ट्रिप्स का इस्तेमाल न करें। वहीं स्ट्रिप की जगह अगर आप जीन्स का कपड़ा का इस्तेमाल करती हैं। लेकिन ऐसा करने से स्किन से जुड़ी समस्या शुरु हो सकती है।

वैक्सिंग के बाद नहाएं जरुर

वैक्सिंग करवाने से पहले नहाना जरुरी नहीं हैं लेकिन वैक्सिंग के बाद नहाना भी जरुरी हैं ताकि स्किन पर लगी वैक्स आराम से निकल जाए और कोई इंफेक्शन न हो। वैक्सिंग से पहले पैच टेस्ट करना जरुरी है

वैक्सिंग करने से पहले जहां बाल निकल जाते हैं तो वहीं कई वैक्सिंग के बाद और स्किन डैमेज हो सकती हैं। वहीं ऐसे में वैक्सिंग करवाने से पहले टेस्ट करवा लें।

घर पर बनाएं बच्चों के लिए स्पेशल यूनिकॉर्न मसाला डोसा, नोट करें रेसिपी

साउथ इंडियन डोसा पूरे भारत में काफी फेमस है। डोसा बेहद आसानी से और क्विक बनने वाली हेल्दी रेसिपी है। बच्चों को भी डोसा खाना खूब पसंद होता है। घर पर नए तरीके से यूनिकॉर्न मसाला डोसा खाएं।

दक्षिण भारत का सबसे फेमस डोसा बहुत सारे लोगों को खाना खूब पसंद है। पूरे भारत में डोसा का स्वाद रच-बस गया है। हर घरों में इसे बनाया जाने लगा हैं। इस लेख में हम आपको अलग अंदाज में बच्चों के लिए यूनिकॉर्न मसाला डोसा की आसान रेसिपी शेयर करने जा रहे हैं, जिसे आप झटपट से बना लेंगे। बच्चे इस डोसा को चखेंगे, तो वह आपसे बार-बार इसे खाने के लिए मांगे। आइए जानते यूनिकॉर्न मसाला डोसा की आसान रेसिपी।

यूनिकॉर्न मसाला डोसा बनाने के लिए इन चीजों की जरुरत होगी

यूनिकॉर्न मसाला डोसा बनाने के लिए डोसा बैटर बनाने के लिए, नैचुरल कलर (पालक, चुकंदर और हल्दी) आलू मसाला और घी की जरुरत पड़ेगी।

यूनिकॉर्न मसाला डोसा बनाने का तरीका

- सबसे पहले 100 ग्राम डोसा बैटर को डोसा तवे पर डालें।
- इसके बाद बड़ा डोसा बनाएं फिर आप इसमें एक-एक कर अपने सभी नैचुरल कलर्स फैलाते जाएं।
- फिर आप चुकंदर, पालक और हल्दी को फैलाएं। यह सभी कलर्स लिक्विड फॉर्म में रखें ताकि फैलाने में आसानी हो।
- जब कलर्स डोसे में मिक्स हो जाए इसके बाद इसमें घी लगाएं। फिर कुछ सेकेंड रुकने के बाद डोसा को फोल्ड कर लें।
- अब अपने क्रिस्पी यूनिकॉर्म डोसा को नारियल चटनी, टमाटर चटनी और आलू मसाला के साथ सर्व करें।

बंबल ने रिपोर्टिंग फीचर का किया विस्तार, AI-जेनरेटेड और नकली प्रोफाइल्स को कर सकते हैं कवर

बंबल, जो भारत में एक लोकप्रिय डेटिंग ऐप है, ने इस फीचर को लॉन्च करने का फैसला अपनी भारतीय उपस्थिति के तहत किया है। यह फीचर इस्तेमालकर्ताओं को अधिक सुरक्षित महसूस कराने का मकसद रखता है, क्योंकि यह उन्हें नकली प्रोफाइल्स की पहचान और रिपोर्ट करने में मदद करेगा।

बंबल ने अपनी रिपोर्टिंग फीचर को विस्तारित कर दिया है। जिससे यह यूजर्स के लिए अब एक और तरीका बन जाता है नकली और AI-जेनरेटेड प्रोफाइल्स को संदेश करने के लिए। यह नया फीचर भारतीय बाजार में भी उपलब्ध होगा, जहां तकनीकी उन्नति की वजह से ऐसे प्रोफाइल्स की संख्या बढ़ रही है।

बंबल, जो भारत में एक लोकप्रिय डेटिंग ऐप है, ने इस फीचर को लॉन्च करने का फैसला अपनी भारतीय उपस्थिति के तहत किया है। यह फीचर इस्तेमालकर्ताओं को अधिक सुरक्षित महसूस कराने का मकसद रखता है, क्योंकि यह उन्हें नकली प्रोफाइल्स की पहचान और रिपोर्ट करने में मदद करेगा।

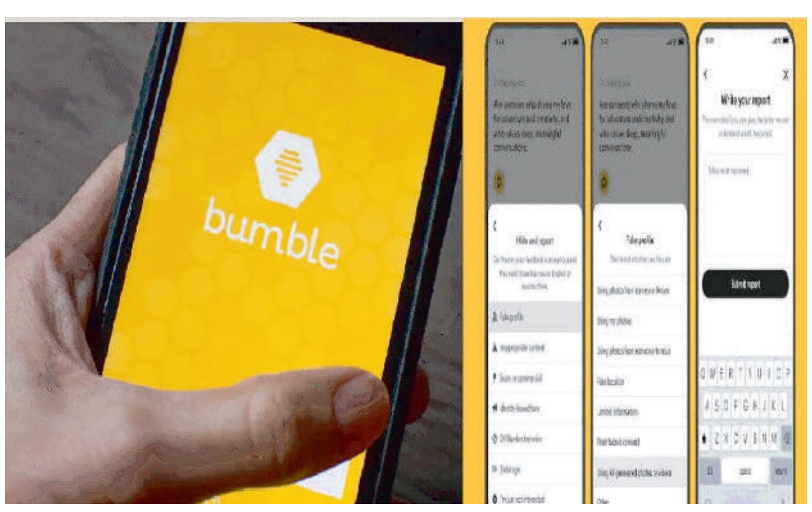

इस नए फीचर के अंतर्गत, उपयोगकर्ता अब AI-जेनरेटेड प्रोफाइल्स को भी रिपोर्ट कर सकेंगे, जो कई बार असली प्रोफाइलों की तरह दिख सकते हैं और इस तरह की पहचान कठिन हो सकती है। बंबल के प्रतिनिधि ने बताया कि उनका उद्देश्य यह है कि उपयोगकर्ता एक न्यायिक और सुरक्षित माहौल में ऑनलाइन डेटिंग का आनंद ले सकें, और नकली प्रोफाइल्स के खिलाफ सख्ती से लड़ाई लड़ सकें।

बंबल ने इस फीचर को अपने अंदर की तकनीकी विशेषताओं के साथ तैयार किया है ताकि वे स्वचालित रूप से ऐसे प्रोफाइल्स को पहचान सकें और इस पर नियंत्रण प्राप्त कर सकें। इसके अलावा, उपयोगकर्ताओं को भी सीधे इस फीचर का उपयोग करने का अधिकार होगा ताकि वे अन्य उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा में योगदान कर सकें।

दूसरों को खुश करने के चक्कर में कहीं खुद की मेंटल हेल्थ खराब कर लीं, हैप्पी रहने के लिए अपनाइए ये 4 तरीके

भागदौड़ भरी लाइफस्टाइल और गलत खान की वजह से कई बार तनाव महसूस करते रहते हैं। बिजी जीवनशैली में इंसान खुद के लिए टाइम नहीं निकाल पाता जिस वजह से वह खुश नहीं रहता है और मेंटल हेल्थ भी खराब होने लगती है। गौरतलब है कि मेटल हेल्थ पर ध्यान देना काफी जरुरी जितना हम फिजिकल हेल्थ का ध्यान रखते हैं। कई बार होता है हम दूसरे को खुश करने में लगे रहते हैं लेकिन खुद की खुशी का भूल ही जाते हैं। याद रखें कि लोग आपसे काफी खुश नहीं होंगे। इसलिए अपनी मेंटल हेल्थ न खराब करें। मेंटल हेल्थ खराब होने से इंसान में गुस्सा और चिड़चिड़ापन बढ़ जाता है, धीरे-धीरे यह तनाव उत्पन्न होने लगता है। आज हम आपको तनाव से निकलने के लिए इन तरीकों को बता रहे हैं।

न कहने में शर्म नहीं करें

कई बार होता है कि दूसरो की खुश करने के चक्कर में हम न कहने में काफी संकोच करते हैं। दूसरों को बुरा न लगे इसके चलते हर काम करने के लिए हां कर देते हैं, लेकिन आपको न कहना सीखना होगा तभी आप इस आदत से बाहर निकल जाएंगे। शुरुआत में आपके लिए ये मुश्किल होगा और आपको अपनी मेंटल हेल्थ के बारे में सोचना जरुरी है।

अपनी प्राथमिकताओं को समझें

हमेशा इस बात का ध्यान रखे कि सदैव अपनी प्राथमिकताओं को अच्छे से समझें। दूसरों से पहले खुद के बारे में सोचें। इसी एक इग्नोरेंस के चलते आप कब प्लीजर बन जाते हैं, यह आपको खुद पता नहीं चलेगा। अपनी जरुरतों, ऑब्जेक्टिव्स और वेलबिंग को प्रियोरिटी पर रखें। हालांकि, इसका यह मतलब भी नहीं कि आप स्वार्थी हैं, खुद को मेंटली और फिजिकली स्ट्रॉन्ग रखकर आप दूसरों की ज्यादा बेहतर तरीके से मदद कर सकते हैं।

सोने से पहले डायबिटीज पेशेंट पानी में मिलाकर पी लें ये 5 मसालें, फिर देखें इसका कमाल, जड़ से खत्म हो जाएगा ब्लड शुगर

आज के समय में सबसे ज्यादा लोग डायबिटीज की बीमारी से परेशान है। सचमुच यह एक क्रोनिक डिजीज है, यह तब होता है जब पैंक्रियाज पर्याप्त इंसुलिन का उत्पादन नहीं कर करता है या फिर शरीर अपने द्वारा उत्पन्न इंसुलिन का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं कर पाता है। दरअसल, इंसुलिए एक प्रकार का हार्मोन है, जो ब्लड शुगर को कंट्रोल करता है। अगर बॉडी में ब्लड शुगर कंट्रोल न होने पर कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं होती है। यदि आप भी डायबिटीज पीड़ित हैं, तो रात के रुटीन पर ज्यादा ध्यान दें। रात के समय सोने से पहले पानी में कुछ मसालों को मिक्स करके पीने से डायबिटीज में काफी लाभ मिलेगा।

अजवाइन का पानी

अजवाइन में कई सारे पोषक तत्व पाए जाते हैं। जिनसे ब्लड शुगर लेवल कम हो सकता है। इसमें फाइबर, एंटीऑक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण पाए जाते हैं। यह मेटाबॉलिज्म में मदद करता है। रात के समय सोने से पहले 1 चम्मच अजवाइन को पानी में उबालकर पिएं। शुंगर आपका कंट्रोल में रहेगा।

लौंग का पानी

इसमें मौजूद यूजेनॉल ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने में काफी मदद करता है। लेकिन, ज्यादा मात्रा में लौंग हाइपोग्लाइसीमिया (कम रक्त शर्करा) का कारण बन सकता है जो सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है। आपको हमेशा सीमित मात्रा में ही लौंग पानी पिएं। रात में सोने से पहले 1 गिलास पानी में 2 से 3 लौंग को डालकर अच्छी तरह से उबाल लें। इसके बाद इस पानी का सेवन करें। इससे काफी हद तक शुगर कंट्रोल हो सकता है।

जीरा का पानी पिएं

ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करने के लिए जीरा वाटर सबसे फायदेमंद है। इसमें एंटीऑक्सीडेंट्स, एंटी-डायबिटिक गुण होते हैं, जो शुगर लेवल को कम कर सकता है। यह शरीर में इंसुलिन उत्पादन में बढ़ावा देता है। रात को सोने से पहले 1 कप जीरे का पानी पी लें। फिर देखें इसका चमत्कार।

मेथी का पानी

रात के समय सोने से पहले मेथी का पानी जरुर पिएं। 1 गिलास पानी में 1 चम्मच करीब मेथी डालकर इसे आधा होने तक उबाल लें। फिर आप इसे चाय की तरह पिएं। इससे आपका शुगर काफी हद तक कंट्रोल हो जाएगा।

दालचीनी का पानी

माना गया है कि दालचीनी की मदद से शुगर लेवल को कंट्रोल करने में काफी हद तक मदद मिल सकती है। दालचीनी हमारे शरीर में इंसुलिन प्रतिरोध को कम करके ब्लड शुगर लेवल को कंट्रोल करता है। यदि आप रात को सोने से पहले 40 दिनों पर दालचीनी के पानी का सेवन करते हैं, तो इससे काफी सुधार हो सकता है।

दिल्ली के राजीव गांधी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में डायलिसिसि शुरू, किडनी के मरीजों को मिलेगी राहत

किडनी के मरीजों के लिए राहत भरी खबर है। दरअसल राजीव गांधी सुपरस्पेशियलिटी अस्पताल में डायलिसिस की सुविधा शुरू की गई है। करीब छह महीने पहले इसकी मांग की गई थी। अब इसके लिए नेफ्रालाजी विभाग में दो मशीनें लगाई गई हैं। फिलहाल अभी एक शिफ्ट में मरीजों की डायलिसिस की जा रही है लेकिन जल्द ही दोनों शिफ्ट में यह सुविधा मिलेगी।

पूर्वी दिल्ली। ताहिरपुर स्थित राजीव गांधी सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में डायलिसिस की सुविधा शुरू हो गई है। नेफ्रालाजी विभाग में दो मशीनें लगाई गई हैं। यह सुविधा शुरू होने से किडनी के मरीजों को काफी राहत मिली है।

अस्पताल के निदेशक डॉ. आशीष गोयल ने बताया कि अभी शुरुआत में एक शिफ्ट में मरीजों की डायलिसिस की जा रही है। जल्द ही दोनों शिफ्ट में यह सुविधा शुरू कर दी जाएगी।

अस्पताल में कुल 650 बेड की क्षमता है। प्रतिदिन एक से डेढ़ हजार की ओपीडी रहती है। बता दें कि नेफ्रालाजी विभाग में चिकित्सक व संसाधन के अभाव में किडनी के मरीजों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था।

जनवरी में रखा था डायलिसिस शुरू करने का प्रस्ताव

मरीजों की परेशानी को देखते हुए अस्पताल प्रशासन ने इसी वर्ष जनवरी माह में डायलिसिस शुरू करने का प्रस्ताव रखा था, लेकिन काफी समय के बाद डायलिसिस की सुविधा का इंतजार खत्म हो चुका है। किडनी के मरीजों को अन्य अस्पतालों के चक्कर काटने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। विभाग के वरिष्ठ चिकित्सक ने बताया कि एक मरीज का डायलिसिस करने में लगभग चार-पांच घंटे लग जाते हैं। अभी सुबह नौ बजे से चार बजे तक डायलिसिस किया जा रहा है। ऐसे में अभी दो-तीन मरीजों का डायलिसिस हो पा रहा है।

केजरीवाल की बीमारी पर गरमाई सियासत, संजय सिंह बोले- दिल्ली सीएम की जिंदगी से खिलवाड़ कर रहे एलजी

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के स्वास्थ्य को लेकर सियासत जारी है। आम आदमी पार्टी से राज्यसभा सांसद Sanjay Singh ने बीजेपी केंद्र सरकार और दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना पर हमला बोला है। उन्होंने रविवार को एक प्रेस वार्ता कर बीजेपी और केंद्र सरकार पर Tihar Jail में Arvind Kejriwal को मारने की साजिश रचने का गंभीर आरोप लगाया है।

नई दिल्ली। आबकारी नीति घोटाला मामले में तिहाड़ जेल में बंद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के भोजन और बीमारी को लेकर रार बढ़ती जा रही है। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने फिर आरोप लगाया है कि भाजपा और एलजी मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को मारने की साजिश कर रहे हैं।

केजरीवाल की तबीयत पर झूठ बोल रहा जेल प्रशासन

संजय सिंह ने कहा, ₹अरविंद केजरीवाल का शुगर लेवल कई बार 50 के नीचे पहुंच गया था। यह रिपोर्ट किसी और ने नहीं बल्कि बीजेपी के जेल प्रशासन के डॉक्टर द्वारा ही उपलब्ध कराई गई है। बीजेपी के एलजी और जेल प्रशासन बार-बार दिल्ली सीएम की तबीयत को लेकर झूठ बोल रहे हैं। यह हत्या के प्रयास का मामला भी हो सकता है। हम इस साजिश में शामिल लोगों के खिलाफ हत्या का प्रयास मामले में मुकदमा भी दर्ज करा सकते हैं।"

पहले बीजेपी, एलजी और तिहाड़ जेल प्रशासन ने कहा था कि अरविंद केजरीवाल जान-बूझकर अपनी शुगर बढ़ा रहे हैं। वह मिठाई खा रहे हैं। इन लोगों ने उन्हें इंसुलिन तक नहीं दी। वो तो कोर्ट के आदेश पर इंसुलिन दी गई। अब कह रहे हैं कि केजरीवाल कुछ खा ही नहीं रहे हैं। वह इंसुलिनले ही नहीं रहे हैं। आपने क्या मजाक लगा रखा है? क्या कोई व्यक्ति खुद ही अपनी सेहत से खिलवाड़ करेगा?

कई बार 50 से नीचे चला गया केजरीवाल का शुगर लेवल

उन्होंने कहा कि क्या कोई आदमी रात में अपना शुगर लेवल कम कर सकता है? जोकि बहुत खतरनाक है। कहा कि एलजी साहब को सीएम की बीमारी के बारे में पता नहीं है।उन्होंने कहा कि सीएम केजरीवाल का शुगर लेवल कई बार खतरनाक रूप से 50 से नीचे चला गया है। इससे वो कोमा में जा सकते हैं और ब्रेन स्ट्रोक का खतरा हो सकता है। क्या एलजी और भाजपा को लगता है कि कोई व्यक्ति जानबूझकर खुद को ऐसे बीमार कर सकता है?

उन्होंने कहा कि यह भाजपा की साजिश है। भाजपा को पता था कि अरविंद केजरीवाल को सुप्रीम कोर्ट से जमानत मिल जाएगी। इसलिए उसने जबरदस्ती सीबीआई से अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार करवाया, क्योंकि उसे यह पता था कि अरविंद केजरीवाल की तबीयत खराब है।

भाजपा जानती है कि केजरीवाल जितने दिन जेल में रहेंगे, उनकी सेहत उतनी ही खराब होती जाएगी। उन्होंने कहा कि जेल प्रशासन, एलजी हाउस और भाजपा केजरीवाल को मारने की गहरी साजिश कर रही है।उन्होंने कहा कि यह हत्या के प्रयास का मामला बनता है, हम अपने वकीलों से राय ले रहे हैं।

21 मार्च को हुई थी गिरफ्तारी

उल्लेखनीय है कि आबकारी नीति घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को 21 मार्च को गिरफ्तार किया था। तब से वह न्यायिक हिरासत में तिहाड़ जेल में हैं। इसी मामले में सीबीआई भी दिल्ली सीएम को अरेस्ट कर चुकी है।

भाजपा और आम आदमी पार्टी दिल्ली को विश्व की प्रदूषित राजधानियों की लिस्ट से हटाने के लिए शीला सरकार की कार्यशैली पर काम करे: देवेन्द्र यादव

सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि दिल्ली में भाजपा के विधानसभा में विपक्ष की भूमिका निभाते 8 विधायक, दिल्ली नगर निगम में 100 से अधिक पार्षद और संसद में सातों सांसद होने के बावजूद भाजपा नकारात्मक राजनीति करके हर विषय पर दिल्ली वालों को गुमराह करने की भूमिका निभा रही है। सकारात्मक सोच के साथ क्यों भाजपा के सांसद, विधायक और निगम पार्षद दिल्ली वालों के हित में राजधानी में पर्यावरण और हरित क्षेत्र के लिए अपने फंड से योजना बनाकर प्रदूषण रोकथाम के लिए काम नहीं कर रहे है।

उन्होंने ने कहा कि भाजपा और आम आदमी पार्टी दिल्ली को विश्व की सबसे प्रदूषित राजधानियों की लिस्ट से हटाने के लिए उसी प्रकार काम करें जिस तरह दिल्ली में कांग्रेस की सरकार प्रगतिशील मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने प्रदूषण नियंत्रण के लिए हरित क्रांति लाकर किया था। कांग्रेस शासन के दौरान प्रदूषण से कोई परेशान नही था और विपक्ष में भाजपा हमारी नीतियों के साथ सहमति बनाकर चलती थी। उन्होंने कहा कि सकारात्मक राजनीति करके ही हम दिल्ली को विश्व स्तरीय प्रदूषण मुक्त राजधानी बनाने के लिए प्रयास कर सकते है, जिस पर कांग्रेस पार्टी हमेशा काम करती आई है।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में खतरनाक प्रदूषण के लिए केजरीवाल सरकार और भाजपा दोनो बराबर की जिम्मेदार है, क्योंकि पिछले 10 वर्षों से केन्द्र में भाजपा सरकार होने के बावजूद राजधानी के विकास सहित प्रदूषण नियंत्रण के लिए आरोप प्रत्यारोप लगाने के अलावा कुछ नही किया है। उन्होंने कहा कि यह सच है कि केजरीवाल सरकार प्रदूषण पर नियंत्रण पाने में पूरी तरह विफल रही है और खुद प्रदूषण नियंत्रण के लिए कुछ करने की जगह हमेशा नजदीकी राज्यों पर पराली जलाने व अन्य आरोप लगाती दिखी है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में साल के 12 महीने एक्यूआई खतरनाक स्तर पर रहना दिल्ली वालों की जान के लिए लगातार संकट पैदा कर रहा है परंतु केजरीवाल सरकार अपनी निजी उलझनों में फंसी होने के कारण उसे दिल्ली के नागरिक की कोई चिंता नहीं है।

उन्होंने कहा कि यह कोई पहला वाकया नही है जब केजरीवाल सरकार प्रदूषण नियंत्रण के लिए मिले फंड 742.69 करोड़ में से सिर्फ 29 प्रतिशत ही खर्च कर पाई है। उन्होंने कहा कि मैं अधूरी तैयारी करके बयानबाजी करने वाले भाजपा नेताओं को बताना चाहता हूँ कि केजरीवाल सरकार प्रदूषण नियंत्रण ही नही बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा, सफाई, निर्माण, लोगों को राशन देने तक के पूरे फंड को पिछले 10 वर्षों किसी भी वर्ष खर्च नही कर पाई है। उन्होंने कहा कि उपयुक्त फंड करने के कारण दिल्ली सरकार ने स्वास्थ्य बजट में 11 प्रतिशत के साथ 1057 करोड़ की कटौती करके साबित कर दिया है कि वह दिल्ली में सरकार चलाने में असमर्थ है। वित्त मंत्री आतिशी ने स्वास्थ्य बजट में 23-24 के 9742 करोड़ के मुकाबले 24-25 में इसे घटाकर 8685 करोड़ दिया है।

उन्होंने कहा कि पिछले एक सप्ताह से अधिक समय से राजधानी में प्रदूषण कंट्रोल के सेन्टरों की चल रही हड़ताल को दिल्ली सरकार द्वारा अनदेखा करने के कारण लाखों वाहनों के प्रदूषण कंट्रोल के प्रमाण पत्र खत्म हो गए है, मुख्यतः प्रदूषण फैला रहे है। उन्होंने कहा कि दिल्ली में 600 से अधिक पीयूसी सेन्टर है, जो पीयूसी सर्टिफिकेट के शुल्क में बढ़ोतरी की मांग कर रहे है। केजरीवाल सरकार और भाजपा का बदले की भावना से राजनीति करने की जगह दिल्लीवालों को सुविधाऐं और सुगम व्यवस्था उपलब्ध कराने में अपनी शक्ति का इस्तेमाल करें, क्योंकि दिल्ली की जनता ने दोनो दलों को अपना कीमती वोट देकर संसद, विधानसभा और दिल्ली नगर निगम तक पहुँचाया है।

22 जुलाई से संसद का मॉनसून सत्र, संडे को हुई ऑल पार्टी मीटिंग, सत्र में विपक्षी गदर की संभावना

परिवहन विशेष। एसडी सेठी।

सोमवार 22 जुलाई से संसद का मॉनसून सत्रशुरू हो रहा है। सत्रसे पहले रविवार को संसद भवन में ऑल पार्टी मीटिंग बुलाई गई। बैठक में बीजेपी समेत 44 पार्टियां शामिल हुई। बैठक की अध्यक्षता राजनाथ सिंह ने की।

कई केंद्रीय मंत्री इसमें शामिल हुए। संसदीय कार्यमंत्री किरेण रिजिजू के मुताबिक मीटिंग में तमाम पार्टियो के साथ सुचारू रूप से संसद को चलाने के लिए सहयोग पर बातचीत सफल रही। पर विपक्ष और सत्ता दल के साथ हुई सर्वदलीय बैठक में कांग्रेस ने डिप्टी स्पीकर का पद मांगा। इसके अलावा नीट, कांवड यात्रा का भी मुद्दा उठाया गया। संसद सत्र के दौरान मंगलवार 23 जुलाई को मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल का पहला बजट निर्मला- सीतारमन लगातार 7वीं बार बजट पेश करने वाली वित्त मंत्री की फेहरिस्त में शामिल हो गई है। इसके अलावा विपक्षी दल नीट यूजी पेपर लीक, अग्निवीर योजना, जे एंड के में आंतकवादी हमला, मणिपुर हिंसा, ट्रेन हादसे, समेत कांवड यात्रा और, लेडी आईएएस के मामले में यूपीएससी के चेयरमैन के इस्तीफे जैसे मुद्दो पर पर हंगामा/गदर कर सरकार को घेर सकते हैं। बता दें कि मॉनसून सत्र 22 जुलाई से 12 अगस्त तक चलेगा। संसद की कार्रवाई पर हर मिनट करीब 2.5 लाख रूपये खर्च होते हैं। यानि हर घंटे के हिसाब से यह रकम 1.5 करोड रूपये होती है। यह रकम सांसद को मिलने वाली सैलरी, सांसदो को मिलने वाली सुविधाओ, संसद सचिवालय स्टाफ की सैलरी खर्च भी शामिल है। यानि जब-जब संसद हंगामें के कारण स्थगित होती है, तो यह नुकसान आम जनता का होता है।, दरअसल यह रकम आम जनता के जेब से वसूले टैक्स के रूप में करोडों रूपये बटोरे जाते है। बावजूद इसके गैर जिम्मेदार सांसद काम की बजाए करोडों की बर्बादी करें तो मामला संगीन हो जाता है।

कब बदलेगा मौसम और उमस से मिलेगी राहत? झमाझम बारिश को लेकर मौसम विभाग ने दिया अपडेट

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली में उमस भरी गर्मी से अभी राहत नहीं मिल रही है। शनिवार को कहीं भी बारिश नहीं हुई। आज गरज और आंधी का संभावना जताई है। मौसम विभाग ने इसका अपडेट दिया है। वहीं सोमवार से मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। दिल्ली में पिछले कुछ दिनों से उमस पड़ रही है और तापमान भी ऊपर रह रहा है।

नई दिल्ली। राजधानी में शनिवार को तापमान सामान्य से तीन डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। इस वजह से उमस भरी गर्मी महसूस की गई। मौसम विभाग ने हल्की वर्षा होने का का पूर्वानुमान जारी किया था, लेकिन दिल्ली में कहीं हल्की वर्षा नहीं हुई। इस वजह से उमस भरी गर्मी ने लोगों को परेशान किया। रविवार को भी उमस भरी गर्मी रह सकती है लेकिन इसके बाद मौसम बदलेगा।

मौसम विभाग के अनुसार, रविवार को आकाश में बादल छाए रहेंगे। गरज व आंधी के साथ हल्की वर्षा होने की संभावना है। अधिकतम तापमान 38 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस रह सकता है।

तापमान में गिरावट की संभावना

सोमवार से बुधवार तक दिल्ली में हल्की से मध्यम स्तर की वर्षा हो सकती है। इस वजह से मौसम विभाग ने सोमवार से लेकर बुधवार तक तीन दिन के लिए यलो अलर्ट जारी किया है। इस दौरान वर्षा होने पर तापमान में तीन से चार डिग्री सेल्सियस की गिरावट हो सकती है। तब उमस भरी गर्मी से राहत मिल सकती है।

कितना रहा शनिवार को तापमान

मौसम विभाग के अनुसार, दिल्ली में अधिकतम तापमान 37.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया जो सामान्य से तीन डिग्री सेल्सियस अधिक है। न्यूनतम तापमान 27.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया जो सामान्य है।

दिल्ली में इस माह अब तक सामान्य से 37 प्रतिशत कम वर्षा हुई है। इस माह अब तक 79.8 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई है जो सामान्य (126.9 मिलीमीटर) से 47.1 मिलीमीटर कम है।

मध्यम श्रेणी में हवा की गुणवत्ता

दिल्ली में शनिवार को हवा की गुणवत्ता मध्यम श्रेणी में रही। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार, रविवार को भी दिल्ली में हवा की गुणवत्ता मध्यम श्रेणी में रहेगी। इसके बाद तीन दिन हवा की गुणवत्ता संतोषजनक श्रेणी में रह सकती है।

सीपीसीबी के अनुसार, दिल्ली का एयर इंडेक्स 109, फरीदाबाद का 125, गाजियाबाद का 143, ग्रेटर नोएडा का 128, गुरुग्राम का एयर इंडेक्स 92 व नोएडा का एयर इंडेक्स 86 रहा।

नई दिल्ली के डीएम का पद बना कुर्सी दौड़ छह महीने में बदले गए दो जिलाधिकारी

परिवहन विशेष न्यूज

जनवरी में ग्रामोदय अभियान शुरू हुआ तो तब दिल्ली सचिवालय में विशेष सचिव गृह के पद तैनात अजय कुमार गुप्ता को जिले का पर्यवेक्षक बनाया गया था। उसके बाद वक्त बदला दक्षिण पूर्वी जिले में स्थानांतरित होकर तैनात किए गए संतोष कुमार राय की जगह अजय कुमार गुप्ता को मिल गई और उनकी जगह आइएएस संतोष चले गए।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी का सबसे हाई प्रोफाइल नई दिल्ली राजस्व जिला पिछले लगभग डेढ़ माह से अतिरिक्त प्रभार के भरोसे चल रहा है। इससे जिले में कामकाज की व्यवस्था प्रभावित हुई है। जिलाधिकारी स्तर की सुनवाई नियमित नहीं हो पा रही हैं। जरूरी फाइलों का निपटारा और अहम बैठकों को अतिरिक्त प्रभार वाले डीएम कुछ समय देकर पूरा कर रहे हैं।

लोकसभा चुनाव संपन्न होने के बाद सात जून को तत्कालीन डीएम ईशा खोसला का स्थानांतरण कर दिया गया। उसके बाद नई दिल्ली जिले का अतिरिक्त प्रभार दक्षिण-पूर्वी दिल्ली जिले के जिलाधिकारी अजय कुमार गुप्ता को दिया गया है। अब वे आधा दिन नई दिल्ली तो आधा दिन दक्षिण पूर्व जिले में बैठकर जरूरी कार्यों का निष्पादन कर रहे हैं।

दक्षिण पूर्वी जिले के डीएम को मिला था अतिरिक्त प्रभार

इसके पहले वर्ष 2022 में मोनिका प्रियदर्शनी का यहां से तबादला हुआ था तब भी करीब एक माह तक यहां पद खाली रहा था। तब भी दक्षिण पूर्वी जिले के डीएम को अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया था। एक माह के बाद तब वर्ष 2014 बैच के आइएएस संतोष कुमार राय को नई दिल्ली का डीएम बनाया गया था।

इस वर्ष जनवरी में नई दिल्ली व दक्षिण पूर्वी दिल्ली के डीएम का जिला एक दूसरे से बदल दिया गया था। बताया जाता है कि लोकसभा चुनाव संपन्न कराने के लिए तत्कालीन दक्षिण-पूर्वी जिले की डीएम ईशा खोसला की वरिष्ठता को देखते हुए नई दिल्ली भेजा गया।

ईशा खोसला 2011 बैच की आइएएस हैं। चुनाव का परिणाम घोषित होने के दो तीन दिन बाद उन्हें जिले से स्थानांतरित कर दिया गया, तब से यह पद खाली है।

6 महीने में दो डीएम के तबादले

ऐसे में छह माह में दो डीएम के तबादले के बाद जिले को नए डीएम का इंतजार है ताकी दैनिक गतिविधियों को गति मिले। इसी तरह से मध्य दिल्ली में सात-आठ माह में तीसरे डीएम कामकाज संभाल चुके हैं।

सृष्टि और दृष्टि

विजय गर्ग

इस पृथ्वी पर करोड़ों प्रकार के जीव हैं। उनमें से मनुष्य को छोड़कर सभी जीवों का जीवन केवल दो धुरी के बीच घूमता है। एक है जन्म, दूसरा मृत्यु। इसके बीच उनके जीवन की कोई उपलब्धि नहीं होती है, लेकिन मनुष्य जीवन थोड़ा अलग होता है। मनुष्य के जीवन में जन्म के साथ सिर्फ शरीर का विकास नहीं होता है, बल्कि उनकी बुद्धि और विवेक का भी विकास होता है। मनुष्य के बुद्धि - विवेक के साथ जो उन्हें प्राकृतिक रूप से मिलती है। विशिष्ट होने की भूख या इच्छा। दरअसल, जीत-हार को लेकर हमारे मानस का विकास ही इस तरह किया गया है कि कोई भी हारना नहीं चाहता है। हर किसी की यही इच्छा होती है कि उनकी जीत ही तय हो। सभी सफल ही होना चाहते हैं, क्योंकि सफलता का मानदंड जीत को ही तय किया गया है। हार को जीत के रास्ते के तौर पर भी नहीं स्वीकार किया जाता है, बल्कि हारने वाले को कमतर के रूप में आंका जाता है।

यों तो सभी मनुष्यों के जीवन की सफलता की परिभाषा अलग-अलग होती है, लेकिन उनमें से कुछ मनुष्य अपने लक्ष्य को पा लेते हैं और कुछ अपने लक्ष्य से कोसों दूर रह जाते हैं। विकास क्रम में यह सुनिश्चित हुआ कि मनुष्य सृष्टि का इकलौता ऐसा जीव है, जिसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। मनुष्य को अद्भुत रूप से चिंतन करने, भविष्य की संभावनाओं का आकलन करने, स्वप्न देखने और अपनी बुद्धि और विवेक से निर्णय लेने की अद्वितीय क्षमता प्राप्त हुई है। आदिकाल से ही देखा जा रहा है कि जैसे-जैसे मनुष्य की सोच विकसित हुई, उसकी दृष्टि ने व्यापक स्वप्न देखा। मनुष्य ने अपने सपने को साकार करने का प्रयास किया और उसे साकार भी किया। यह मनुष्य की अद्भुत क्षमता को दर्शाता है। मगर ऐसा कर पाना सभी लोगों के लिए संभव नहीं हो सका।

कालक्रम में जैसी व्यवस्था निर्मित और विकसित हुई, उसमें यह क्षमता कुछ ही मनुष्य या वर्गों के दायरे में सिमटती गई। इस क्रम में कुछ ही मनुष्य विशिष्ट बन पाते हैं। अब सवाल है कि क्या ऐसा होने के पीछे भाग्य की बड़ी भूमिका है? क्या यह जन्मजात ही तय होता है कि कौन कितना सफल होगा? क्या इसे लेकर उनकी नियति पहले से ही तय होती है या विशिष्ट मनुष्य के अंदर कोई खास गुण होता है? क्या सफल होने की आदत को सीखा जा सकता है? क्या हार को जीत में बदला जा सकता है? तो इसका जवाब है कि लोगों का दृष्टिकोण ही उनका भाग्य है। यह किसी को जन्मजात नहीं मिलती है। इसे विकसित करना सीखा जा सकता है। असल में प्रकृति सभी को समान अवसर देती है। दायरों का निर्माण, अवसरों की सीमा आदि मनुष्यों के बीच समर्थ और वर्चस्वशाली समूहों ने किया। फिर वंचित लोगों या समूहों को भाग्य का सहारा दिलासे के रूप में सौंप दिया गया।

कोई भी मनुष्य विशिष्ट हो सकता है, लेकिन विशिष्ट मनुष्य के कुछ गुण उन्हें विशिष्ट बनाते हैं। उन विशिष्ट गुणों में एक खास गुण होता है- परिस्थितियों को देखने का दृष्टिकोण। सोचने की बात है कि अगर किसी सामान्य मनुष्य के जीवन में रामकथा में वर्णित भगवान राम की तरह की परिस्थिति हो तो अधिकतम व्यक्ति अपना धैर्य खो देंगे। जीवन को लेकर विश्वास खो देंगे और फिर निराशा से घिर जाएंगे। वे अपने साथ शिकायतों का पुलिंदा लिए घूमेंगे कि ईश्वर ने या प्रकृति ने उसके साथ अन्याय कर दिया... भाग्य ने धोखा दे दिया। अन्यथा वे भी कमाल कर सकते थे। मगर भगवान राम का परिस्थिति को लेकर विशिष्ट दृष्टिकोण रहा, जिसने सामान्य मनुष्य की क्षमताओं के साथ बिना किसी चमत्कार के उनकी जीत सुनिश्चित की। मुश्किल परिस्थितियों में भी उनका सकारात्मक दृष्टिकोण ही उनकी ताकत रही। हालांकि वे भी विचलित हुए और यह मनुष्य का गुण है, लेकिन उनका दृष्टिकोण सदैव दृढ़ और स्पष्ट रहा, जो उनके चेहरे पर खिली दिव्य मुस्कान की तरह सकारात्मक रहा। स्पष्ट है कि विशिष्ट व्यक्ति भी किसी परिस्थिति में हारा हुआ महसूस करते हैं, लेकिन वे अपने दृष्टिकोण और विश्वास से हार को अपनी जीत में बदल लेते हैं। मनुष्य अपनी किसी भी हार की जिम्मेदारी खुद नहीं लेता है, बल्कि परिस्थिति पर डाल देता है। या फिर भाग्य पर खराब होने का दोष मढ़ देता है। वह नहीं समझ पाता है कि उसका दृष्टिकोण ही उसके भाग्य का निर्माण करता है, क्योंकि भाग्य और कुछ नहीं, बल्कि हार न मानने की दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ सही अवसर की तलाश और अवसर मिलने पर सही समय पर लिया गया सही निर्णय होता है।

इस संबंध में महात्मा गांधी ने कहा था कि आपका विश्वास आपके विचार बनते हैं, आपके विचार आपके शब्द बनते हैं, आपके शब्द आपके कर्म बनते हैं, आपके कर्म आपकी आदतें बनते हैं, आपकी आदतें आपके मूल्य बनते हैं, आपके मूल्य आपकी नियति बनते हैं। इस प्रकार जीवन या प्रकृति आपके समक्ष जो भी परिस्थिति लाती है, हम उसका किस दृष्टिकोण और विश्वास के साथ सामना करते हैं, सब कुछ इसी पर निर्भर करता है। सकारात्मक परिस्थिति के बावजूद हमारा नकारात्मक रवैया हमको निराश करने वाला परिणाम ही देगा। जबकि नकारात्मक परिस्थितियों के बावजूद हमारा सकारात्मक रवैया हमारी हार को भी जीत में बदल देगा।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल
शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

आमदनी अठन्नी, खर्चा रुपैया : गुरुग्राम नगर निगम का खजाना खाली, खातों में बचे सिर्फ 400 करोड़

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम नगर निगम के खातों में सिर्फ 400 करोड़ रुपये ही बचे हैं जिससे पूरा साल बजट प्रबंधन नहीं हो सकता है। वर्ष 2019 में लगभग 1077 करोड़ रुपये निगम के खातों में जमा थे। वजीराबाद स्पोर्ट्स कांप्लेक्स निर्माण के लिए हाल ही में निगम ने निजी एजेंसी को काम सौंपा है। इसके निर्माण पर लगभग 100 करोड़ रुपये खर्च होने हैं।

गुडगाँव। प्रदेश के सबसे धनी नगर निगम गुरुग्राम के सामने आने वाले दिनों में बजट का संकट हो सकता है। स्थिति यह है कि नगर निगम का सालाना खर्च लगभग एक हजार करोड़ रुपये है और आमदनी 600 करोड़ रुपये भी नहीं है।

निगम के खजाने पर लगातार बोझ बढ़ने और आय घटने के कारण जमा पूंजी खत्म हो रही है। इसके साथ ही सड़क, फ्लाईओवर, अंडरपास, मेडिकल कॉलेज, बिल्डिंग और पार्किंग निर्माण जैसे प्रोजेक्ट में भी करोड़ों रुपये खर्च हो रहे हैं, लेकिन प्रापर्टी टैक्स और विज्ञापनों से आय घट रही है। अगर यही स्थिति रही तो कर्मचारियों के लिए वेतन का संकट भी हो सकता है।

एनएचएआइ ने नगर निगम से मांगे 67 करोड़ रुपये

शहर में बनाए गए अंडरपास निर्माण के बजट में नगर निगम का भी हिस्सा था। 121 करोड़ रुपये का भुगतान करने के बाद अब 67 करोड़ रुपये एनएचएआइ ने नगर निगम से मांगे हैं। इसी तरह जीएमडीए का भी पानी और सीवर का 117 करोड़ रुपये का बिल बकाया है।

शीतला माता मेडिकल कॉलेज निर्माण का हिस्सा भी नगर निगम को लगभग 305 करोड़ रुपये देना है। 2017 में निगम ने इसके लिए 50 करोड़ रुपये का भुगतान किया था। अगर सरकार से नगर निगम को फंड नहीं मिला तो निगम का खजाना जल्द ही खाली हो सकता है। वित्त वर्ष 2023-24 में निगम को केंद्र और राज्य सरकार से लगभग 250 करोड़ रुपये मिले थे।

सालाना लगभग एक हजार करोड़ खर्च करता है निगम

कार्य - खर्च (करोड़ रुपये में)
- सेनिटेशन - 350
- विकास - 300
- मरम्मत - 100
- वेतन - 250

इन स्त्रोतों से निगम को होती है आय

आय स्त्रोत - आय (करोड़ रुपये)
- प्रॉपर्टी टैक्स - 200 से 250
- स्टांप ड्यूटी - 180 से 250
- विज्ञापन -40 से 50

विज्ञापनों से आय की स्थिति

वर्ष - आय (करोड़ रुपये में)
- 2017-18 - 14.14
- 2018-19 - 13.90
- 2019-20 - 15.45
- 2022-23 - 20
- 2023-24 - 50

प्रॉपर्टी टैक्स से आय की स्थिति

वर्ष - आय (करोड़ रुपये)
- 2017-18 - 332
- 2018-19 - 207
- 2019-20 - 168
- 2020-21 - 225
- 2023-24 - 250

तीन सौ करोड़ तीन प्रोजेक्ट पर खर्च होंगे

व्यापार सदन में निगम का कार्यालय बन रहा है। इसकी अनुमानित लागत 130 करोड़ रुपये है जोकि बढ़ भी सकती है। इसी तरह सदर बाजार के समीप मल्टीलेवल पार्किंग बन रही है।

वजीराबाद स्पोर्ट्स कांप्लेक्स निर्माण के लिए हाल ही में निगम ने निजी एजेंसी को काम सौंपा है। इसके निर्माण पर लगभग 100 करोड़ रुपये खर्च होने हैं। ऐसे में इन तीनों प्रोजेक्ट पर लगभग 300 करोड़ रुपये खर्च होने हैं। बजट खत्म होने से इनके भुगतान की चुनौती भी निगम के सामने होगी।

कांवड यात्रा के कारण आज से लागू हुआ ट्रैफिक डायवर्जन प्लान, 4 अगस्त तक इन मार्गों पर जाने से बचें...

साहिबाबाद। नोएडा। कांवड़ियों के सुरक्षित आवागमन को लेकर डायवर्जन प्लान लागू किया गया है। कांवड़ यात्रा के मद्देनजर सोमवार यानी आज से चार अगस्त तक ट्रैफिक डायवर्जन रहेगा। डायवर्जन के कारण चिल्ला रेड लाइट से पक्षी विहार गेट तक मार्ग पर वाहनों का आवागमन पूर्णतः प्रतिबंधित रहेगा।

गाजियाबाद होकर बुलंदशहर, हापुड़ व मुरादाबाद जाने वाले वाहनों को रूट निर्धारण का पालन करना होगा। डायवर्जन के दौरान आपातकालीन वाहनों को सकुशल पास कराया जाएगा। यातायात डायवर्जन के दौरान असुविधा से बचने के लिए पुलिस की ओर से वैकल्पिक मार्गों का प्रयोग करने की अपील की गई है।

निगरानी के लिए ट्रैफिक पुलिसकर्मी रहेंगे तैनात

सेक्टर-14ए शनि मंदिर से ओखला बर्ड सेंचुरी होते हुए सिर्फ कांवड़ ले जाने वाले और शिविर लगाने से संबंधित लोगों को छूट रहेगी। चिल्ला बार्डर के पास बने स्थायी ट्रैफिक बूथ ट्रैफिक पुलिसकर्मियों की ड्यूटी निगरानी के लिए लगाई जाएगी।

कांवड़ का जत्था गुजरने के दौरान ट्रैफिक पुलिसकर्मी

यातायात को रोककर कांवड़ियों को रास्ते दिखाने का काम करेंगे। लोग हेल्पलाइन नंबर 9971009001, वाट्सएप नंबर 7065100100 व ट्विटर हैंडल @noidatraffic से संपर्क कर सकते हैं।

ऐसा रहेगा ट्रैफिक डायवर्जन

-दिल्ली-बदरपुर बार्डर ओखला बैराज से नोएडा होकर बाया गाजियाबाद होकर बुलंदशहर, हापुड़, मुरादाबाद जाने वाले भारी, मध्यम व हल्के वाहन नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस-वे से ईस्टर्न पेरीफेरल एक्सप्रेस-वे का प्रयोग करेंगे।

-दिल्ली से डीएनडी फ्लाईओवर होकर नोएडा से बाया गाजियाबाद होकर बुलंदशहर, हापुड़, मुरादाबाद जाने वाले भारी, मध्यम व हल्के वाहन नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस-वे से ईस्टर्न पेरीफेरल एक्सप्रेस-वे का प्रयोग करेंगे।

-चिल्ला रेड लाइट होकर गाजियाबाद, हापुड़, मुरादाबाद जाने वाले भारी, मध्यम व हल्के वाहन नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस-वे से ईस्टर्न पेरीफेरल एक्सप्रेस-वे का प्रयोग करेंगे।

-एमपी-01 मार्ग पर बने एलिवेटेड से होकर गाजियाबाद, हापुड, मुरादाबाद जाने वाले भारी, मध्यम व हल्के वाहन नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस-वे से ईस्टर्न पेरीफेरल एक्सप्रेस-वे का प्रयोग करेंगे।

-एनआईबी, माडल टाउन, छिजारसी, ताज हाइवे से होकर गाजियाबाद, हापुड, मुरादाबाद जाने वाले भारी, मध्यम व हल्के वाहनों को वापस कर ईस्टर्न पेरीफेरल एक्सप्रेस-वे से चलेंगे।

-अलीगढ, बुलन्दशहर, सिकंद्राबाद से दादरी एनएच-91 होकर गाजियाबाद, दिल्ली की ओर जाने वाले भारी, मध्यम व हल्के मालवाहक वाहन ईस्टर्न पेरीफेरल का प्रयोग करेंगे।

-सिकंद्राबाद, कासना से परी चौक होकर नोएडा-ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेस-वे से दिल्ली की ओर जाने वाले भारी, मध्यम व हल्के मालवाहक वाहन सिरसा

कांवड़ यात्रा को लेकर ट्रैफिक डायवर्जन प्लान लागू, अगले 15 दिनों तक मांस की बिक्री पर रोक

सावन का पहला सोमवार होने की वजह से सोमवार आधी रात तक दूधेश्वरनाथ मंदिर के आसपास वाहनों की आवाजाही प्रतिबंधित रहेगी। रविवार रात 10 बजे से लागू हुआ यह डायवर्जन अगले 26 घंटे तक है। कांवड़ यात्रा के दौरान जनपद में कांवड़ रूट और धार्मिक स्थलों के आसपास स्थित मांस की दुकानें बंद रहेंगी। पुलिस ने मीट विक्रेताओं को दुकान बंद रखने के निर्देश दिए हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद। कांवड़ यात्रा के लिए भारी वाहनों का डायवर्जन रविवार आधी रात से लागू कर दिया गया है। शहर के प्रवेश स्थानों से भारी वाहनों को अंदर आने की इजाजत नहीं है। उन्हें वैकल्पिक मार्गों का प्रयोग कर गंतव्य तक रवाना किया जा रहा है। आवश्यक सेवाओं से जुड़े वाहनों को अनुमति के बाद सर्शत डायवर्जन से छूट दी गई है।

डायवर्जन लागू होने वाले स्थानों पर पुलिस ने सांकेतिक बोर्ड वाहन चालकों की सुविधा के लिए लगाए हैं। सावन के पहले सोमवार को दूधेश्वरनाथ मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है। भीड़ को देखते हुए पुलिस ने मंदिर के आसपास रविवार रात 10 बजे से डायवर्जन लागू किया है। यह डायवर्जन सोमवार आधी रात तक लागू रहेगा।

कांवड़ रूट और धार्मिक स्थलों के निकट मीट की दुकानें रहेंगी बंद

कांवड़ यात्रा के दौरान जनपद में कांवड़ रूट और धार्मिक स्थलों के आसपास स्थित मांस की दुकानें बंद रहेंगी। पुलिस ने मीट विक्रेताओं को दुकान बंद रखने के निर्देश दिए हैं। कांवड़ मार्ग पर ही दुकानदारों को नाम का बोर्ड लगाने के निर्देश भी दिए गए हैं। अतिरिक्त पुलिस आयुक्त दिनेश कुमार पी का कहना है कि कांवड़ यात्रा के दौरान करीब 15 दिन तक जनपद में कांवड़ रूट पर मीट की दुकानें बंद रखी जाएंगी। रोड के दोनों तरफ अंडे, मीट, मछली या अन्य मांसाहारी खाने की दुकानें और ठेली बंद रखनी हैं। दुकानदारों द्वारा नाम का बोर्ड लगाने के निर्देश पर उनका कहना है कि यह शासन का निर्देश पहले से ही है। इसका पालन कराया जाएगा।

आज दूधेश्वरनाथ मंदिर के आसपास यह रहेगा डायवर्जन

-चौधरी मोड़ से ठाकुरद्वारा तिराहे की तरफ जाने वाले वाहनों को ठाकुरद्वारा फ्लाईओवर से जाना है। फ्लाईओवर के नीचे से वाहनों को आगे नहीं जाने दिया जा रहा है।

-गौशाला अंडरपास से वाहन दूधेश्वरनाथ मंदिर की तरफ नहीं जाएंगे

-दूधेश्वरनाथ मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं को अपने वाहन घंटाघर रामलीला मैदान एवं विजय नगर की तरफ मिलिट्री ग्राउंड में खड़े करने होंगे। वाहन खड़ा करने के बाद मंदिर तक पैदल ही जाना होगा।

भारी वाहनों के लिए डायवर्जन

-दिल्ली की ओर से आने वाले वाहनों का (तुलसी निकेतन बार्डर, सीमापुरी बार्डर, आनन्द विहार बार्डर) का गाजियाबाद शहर में प्रवेश प्रतबंधित रहेगा। ऐसे सभी वाहन गाजीपुर बार्डर से यूपी गेट होते हुए एनएच-नौ पर गंतव्य तक जाएंगे।

- दिल्ली की ओर से आने वाले वाहन जिन्हें हरिद्वार अमरोहा, मुरादाबाद, लखनऊ आदि स्थानों पर जाना है, गाजीपुर बार्डर से यूपी गेट होते हुए एनएच-नौ पर डासना से ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेस-वे होते हुए अपने गंतव्य को जाएंगे

- बागपत की ओर से दिल्ली की ओर जाने वाले वाहन ट्रोनिका सिटी, सोनिया विहार होते हुए जाएंगे।

- हापुड़, बुलन्दशहर की तरफ से आने वाले वाहन डासना पुल से सीधे गाजियाबाद शहर की और न आकर एनएच-नौ का प्रयोग करते हुए जाएंगे।

- बुलन्दशहर, हापुड़ की तरफ से आने वाले वाहन लाल कुआं से सीधे गाजियाबाद शहर की ओर न आकर एनएच-नौ का प्रयोग करते हुए अपने गंतव्य को जाएंगे।

- दिल्ली, हापुड़, लालकुआं की ओर से आने वाले वाहन आत्माराम स्टील प्लान्ट तिराहा से शहर की ओर न आकर एनएच-नौ का प्रयोग करते हुए जाएंगे।

- लोनी बार्डर से लोनी कस्बे की ओर भारी वाहनों का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा।

- संतोष मेडिकल कट से मेरठ तिराहा की तरफ भारी वाहनों का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा।

- गौर ग्रीन एवेन्यू, खोड़ा, काला पत्थर, नोएडा सेक्टर 62, छिजारसी, कनावनी पुस्ता से एनएच-नौ होते हुए इंदिरापुरम क्षेत्र में भारी वाहनों का प्रवेश पूर्ण रूप से प्रतिबंधित रहेगा।

- गंगनहर पटरी कांवड़ मार्ग, पाइप लाइन मार्ग, दिल्ली मेरठ रोड व दिल्ली मेरठ एक्सप्रेस-वे पर भारी वाहनों का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा।

- हापुड़, भोजपुर से आने वाले वाहनों का मोदीनगर की ओर प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा।

- वसुंधरा फ्लाई ओवर से मोहननगर की ओर भारी वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित रहेगा।

हेल्पलाइन नंबर

- नगर नियंत्रण कक्ष - 9643208942
-देहात नियंत्रण कक्ष-8929436700
- ट्रांस हिंडन नियंत्रण कक्ष - 9643204440
- ट्रैफिक नियंत्रण कक्ष - 9643322904

यातायात निरीक्षकों से भी संपर्क कर सकते हैं

- यातायात निरीक्षक प्रथम दिल्ली-मेरठ एक्सप्रेस-वे व शहर क्षेत्र-7007847097
- यातायात निरीक्षक द्वितीय मेरठ रोड व शहर क्षेत्र 8707676770
- यातायात निरीक्षक तृतीय मुरादनगर व मोदीनगर क्षेत्र - 7398000808
- यातायात निरीक्षक चतुर्थ यूपी गेट व इंदिरापुरम क्षेत्र - 8130674912
- यातायात निरीक्षक पंचम मोहननगर, तुलसी निकेतन व सीमापुरी क्षेत्र - 9219005151
- प्रभारी उपनिरीक्षक यातायात लोनी व टीला मोड़ क्षेत्र- 9412743743

'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पत्रिका ने' 'समझाया भाजपा नेतृत्व को!'

विजय कुमार

लोकसभा चुनावों में 'अब की बार 400 पार' का नारा लगाने वाली भाजपा अपने बूते पर बहुमत का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाई और सहयोगी दलों की सहायता से ही गठबंधन सरकार बना पाई है। तभी से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत सहित संघ के अन्य नेताओं...

लोकसभा चुनावों में 'अब की बार 400 पार' का नारा लगाने वाली भाजपा अपने बूते पर बहुमत का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाई और सहयोगी दलों की सहायता से ही गठबंधन सरकार बना पाई है। तभी से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत सहित संघ के अन्य नेताओं द्वारा भाजपा की खामियों का विश्लेषण किया जा रहा है। जहां मोहन भागवत ने कहा कि सेवक को अहंकार नहीं करना चाहिए, वहीं 'राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ' की पत्रिका 'आर्गेनाइजर' में प्रकाशित एक लेख में 'संघ' के आजीवन सदस्य रतन शारदा ने भाजपा के खराब प्रदर्शन के लिए अनावश्यक राजनीति को भी एक कारण बताते हुए कहा था कि :

''चुनाव के नतीजे भाजपा के अति आत्मविश्वासी कार्यकत्त्राओं व कई नेताओं का सच से सामना कराने वाले हैं जो प्रधानमंत्री के आभामंडल के आनंद में डूबे रह गए। उन्होंने आम जन की आवाज को अनदेखा कर दिया और 'संघ' के कार्यकत्त्राओं से सहयोग तक नहीं मांगा।'' ''संघ को आतंकवादी संगठन बताने वाले कांग्रेसियों को भाजपा में शामिल करने जैसे फैसलों ने भाजपा की छवि को खराब किया और संघ से हमदर्दी रखने वालों को भी ठेस पहुंची।'' इसके बाद संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इंद्रेश कुमार ने 14 जून को कहा था कि ''राम सबके साथ न्याय करते हैं। जिन्होंने राम की भक्ति की परंतु उनमें धीरे-धीरे अहंकार आ गया। उस पार्टी को सबसे बड़ी पार्टी घोषित कर दिया। उनको जो पूर्ण अधिकार मिलना चाहिए, जो शक्ति मिलनी चाहिए, वह भगवान ने अहंकार के कारण रोक दी।''

और अब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंधित मराठी साप्ताहिक 'विवेक' में प्रकाशित एक लेख 'कार्यकत्त्रा हतोत्साहित नहीं परंतु भ्रमित' में महाराष्ट्र के चुनावों में भाजपा के निराशाजनक प्रदर्शन के लिए पार्टी के नेताओं, इसके कार्यकत्त्राओं और राजग सरकार के बीच संवाद के अभाव तथा अजित पवार के नेतृत्व वाली राकांपा के साथ गठबंधन को जिम्मेदार ठहराते हुए लिखा है कि :

''प्रत्येक (भाजपा) कार्यकत्त्रा महाराष्ट्र में लोकसभा चुनावों में विफलता के लिए राकांपा के साथ गठबंधन को जिम्मेदार मानता है। भाजपा कार्यकत्त्राओं ने पार्टी का राकांपा से हाथ मिलाना पसंद नहीं किया।''

''शिव सेना (उद्धव ठाकरे) हिन्दुत्व आधारित होने के कारण भाजपा की स्वाभाविक सहयोगी थी जिसे मतदाताओं ने स्वीकार किया था परंतु राकांपा के साथ गठबंधन ने उस भावना को बदल दिया तथा जन भावनाएं पूरी तरह भाजपा के विरुद्ध हो गईं। (पार्टी में) असंतोष पैदा हुआ जो लोकसभा चुनाव परिणामों के बाद और बढ़ गया।''

''भाजपा के कार्यकत्त्रा राकांपा से हाथ मिलाने के फैसले से सहमत नहीं थे और पार्टी के कायकत्त्राओं के असंतोष को कम करके आंका गया।''

''भाजपा ही एकमात्र पार्टी है जो कार्यकत्त्राओं को नेता बनाती है। इसी तरीके से पार्टी को अटल बिहारी वाजपेयी, प्रमोद महाजन व नितिन गडकरी जैसे नेता मिले, परंतु अब पार्टी के कार्यकत्त्रा महसूस करने लगे हैं कि इस परम्परा को पलट दिया गया है। विपक्ष ने यह धारणा कायम करने में सफलता पाई कि भाजपा में मूल कार्यकत्त्रा हमेशा निचली पायदान पर रहेंगे और दलबदलुओं को बड़े पद मिलेंगे।''

लेख में विपक्ष द्वारा भाजपा के विरुद्ध 'वाशिंग मशीन' वाले तंज का भी उल्लेख किया गया और इस पर भी प्रश्न उठाया गया है कि क्या भाजपा द्वारा एमरजैंसी के विरुद्ध संघर्ष और राम मंदिर आंदोलन में दी गई कुर्बानियों के प्रचार का इस वर्ष के अंत में होने वाले राज्य विधानसभाओं के चुनावों में युवा मतदाताओं पर कोई प्रभाव पड़ेगा? उल्लेखनीय है कि भाजपा ने महाराष्ट्र में राकांपा तथा मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिव सेना के साथ गठबंधन करके (48 सीटों पर) चुनाव लड़ा था परंतु केवल 9 सीटें ही जीत पाई, जबकि 2019 के चुनावों में इसने 23 सीटें जीती थीं। मोहन भागवत, रतन शारदा और इंद्रेश कुमार के बाद अब संघ की पत्रिका 'विवेक' में प्रकाशित लेख पर कोई टिप्पणी न करते हुए हम इतना ही कहना चाहेंगे कि इन सभी बातों पर भाजपा नेतृत्व को विचार करके इनके द्वारा व्यक्त की गई खामियों को दूर करना चाहिए ताकि केवल महाराष्ट्र में ही नहीं, बल्कि अन्य राज्यों में भी, जहां निकट भविष्य में चुनाव होने वाले हैं, पार्टी की स्थिति मजबूत हो सके।

'एक महीने में छठी रेल दुर्घटना'' रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ध्यान दें'

विजय कुमार

भारतीय रेलवे एशिया का दूसरा सबसे बड़ा रेल नैटवर्क है। सार्वजनिक परिवहन होने के नाते इसके सस्ता और सुरक्षित होने की अपेक्षा की जाती है परंतु लगातार किराए बढ़ाने के बावजूद सुविधाओं और सुरक्षा के मामले में अक्सर रेलवे में लापरवाही के मामले सामने आते...

भारतीय रेलवे एशिया का दूसरा सबसे बड़ा रेल नैटवर्क है। सार्वजनिक परिवहन होने के नाते इसके सस्ता और सुरक्षित होने की अपेक्षा की जाती है परंतु लगातार किराए बढ़ाने के बावजूद सुविधाओं और सुरक्षा के मामले में अक्सर रेलवे में लापरवाही के मामले सामने आते रहते हैं। गत मास 17 जून को बिहार में 'कंचनजंगा एक्सप्रैस' रेल दुर्घटना, जिसमें 14 यात्री मारे गए थे, के बाद से पिछले मात्र 2 सप्ताह में निम्न रेल दुर्घटनाएं हो चुकी हैं :

* 2 जुलाई को अम्बाला-दिल्ली ट्रैक पर 'तरावड़ी' रेलवे स्टेशन के निकट चलती मालगाड़ी से 9 कंटेनर गिरने के परिणामस्वरूप 4 पहिए ट्रैक से उतर गए और 3 किलोमीटर तक का ट्रैक क्षतिग्रस्त हो गया।

* 4 जुलाई को जालंधर से जम्मू-तवी जा रही मालगाड़ी कठुआ से 2 किलोमीटर पहले खराब हो गई। बताया जाता है कि माधोपुर रेलवे स्टेशन को क्रॉस करने के दौरान चढ़ाई के कारण इंजन आगे नहीं चढ़ पाया और ड्राइवर ने नीचे उतर कर देखा तो पहिए स्लिप कर रहे थे।

* 6 जुलाई को नासिक और मुम्बई के बीच चलने वाली 'पंचवटी एक्सप्रैस' के डिब्बे ठाणे के 'कसारा' में इंजन से अलग हो गए।

* 12 जुलाई को बिहार के पटना जिले में दानापुर मंडल के 'दनियावां' स्टेशन के निकट एक मालगाड़ी के 6 डिब्बे पटरी से उतर जाने के कारण फतुहा-इस्लामपुर डिवीजन पर रेल यातायात अवरुद्ध हो गया।

* 15 जुलाई को महाराष्ट्र के ठाणे जिले में 'लोकमान्य तिलक टर्मिनस-गोरखपुर एक्सप्रैस' के एक डिब्बे के ब्रेक जाम हो जाने के कारण पहियों के निकट आग लग गई जिसे अग्निशमन यंत्रों की सहायता से बुझाया गया।

* और अब 18 जुलाई को उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले में 'मोतीगंज' थाना क्षेत्र के 'पिकौरा' गांव के निकट जोरदार झटका लगने से चंडीगढ़ से डिब्रूगढ़ जा रही 'चंडीगढ़-डिब्रूगढ़ साप्ताहिक एक्सप्रैस ट्रेन' के 14 डिब्बे पटरी से उतर जाने से 3 व्यक्तियों की मौत तथा 32 घायल हो गए।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार ट्रेन से बाहर निकलने के बाद यात्रियों को निकट की सड़क तक पहुंचने के लिए ट्रैक के दोनों ओर खेतों में घुटनों तक भरे पानी से गुजरना पड़ा। मौके पर पहुंचे जिलाधिकारियों ने यात्रियों को उनके गंतव्य तक पहुंचाने के लिए बसों की व्यवस्था की। दुर्घटना के कारण कटिहार-अमृतसर एक्सप्रैस, आम्रपाली एक्सप्रैस, जम्मू-तवी अमरनाथ एक्सप्रैस और गुवाहाटी-श्रीमाता वैष्णो देवी कटरा एक्सप्रैस समेत 10 रेलगाडियों को मार्ग बदलकर संचालित करना पड़ा। रेलवे में आधुनिक तकनीक लाकर दुर्घटनाएं कम करने वाली योजनाओं पर गत 5 वर्षों में 1 लाख करोड़ रुपए के लगभग राशि खर्च किए जाने के बावजूद रेल दुर्घटनाएं हो रही हैं।

-:सौजन्य:-
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV
Drive the Future

सांसद हेमा मालिनी ने ठुकराल के ई-ऑटो पर बैठकर वृंदावन परिक्रमा का किया निरीक्षण

परिवहन विशेष न्यूज

मथुरा। सांसद हेमा मालिनी ने गुरु पूर्णिमा से पहले वृंदावन परिक्रमा मार्ग का निरीक्षण किया। इसके लिए वह अपनी कार से उतरीं और सामने दिख रहे ठुकराल ई-ऑटो को पकड़कर अधिकारियों के साथ परिक्रमा मार्ग का निरीक्षण किया। उन्होंने रास्ते में जहां भी गड्ढे और गंदगी देखी, वहां सफाई के निर्देश दिए। इस दौरान परिक्रमा मार्ग के निरीक्षण के दौरान सांसद ने जगह-जगह ई-ऑटो रुकवाकर श्रद्धालुओं की समस्याओं के बारे में जानकारी और परिक्रमा कर रहे लोगों से बातचीत की।

टीआईआई की इलेक्ट्रिक शाखा वित्त वर्ष 2025 में ई-रिक्शा व ई-बाइक करेगी पेश

परिवहन विशेष न्यूज

चेन्नई स्थित मुरुगप्पा समूह की ईवी शाखा ट्यूब इन्वेस्टमेंट्स ऑफ इंडिया (टीआईआई) भी आने वाले महीनों में कई लॉन्च के माध्यम से ईवी में अपनी उपस्थिति का विस्तार करने के लिए तैयार है। इसमें एक तिपहिया कार्गो, ई-रिक्शा, ट्रैक्टर और इलेक्ट्रिक हैवी कमर्शियल व्हीकल्स (एचसीवी) के चार वेरिएंट शामिल हैं। टीआईआई अपनी सहायक कंपनी टीआई क्लीन मोबिलिटी प्राइवेट लिमिटेड (टीआईसीएमपीएल) के माध्यम से ईवी पेश करेगी।

अपने मोंट्रा इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर पैसेंजर ऑटो के सफल लॉन्च के बाद, ट्यूब इन्वेस्टमेंट्स ऑफ इंडिया लिमिटेड (टीआईआई) अपनी सहायक कंपनियों के माध्यम से वित्त वर्ष 2025 में इलेक्ट्रिक कार्गो और ई-रिक्शा वेरिएंट और ई-बाइक का अनावरण करने की योजना बना रही है।

हमें ईवी सेगमेंट में अपार विकास के अवसरों की उम्मीद है। अनुकूल सरकारी नीतियों और चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के कार्यान्वयन के साथ, यह सेगमेंट सभी सेगमेंट में तेजी से विकास के लिए तैयार है, टीआईआई ने कहा।

टीआईआई की सहायक कंपनी टीआई क्लीन मोबिलिटी प्राइवेट लिमिटेड (टीआईसीएमपीएल) की इलेक्ट्रिक मोबिलिटी के अंतर्गत चार व्यावसायिक इकाइयाँ हैं, जिनमें 3 पहिया वाहन, ट्रैक्टर, मध्यम और भारी तथा छोटे वाणिज्यिक वाहन शामिल हैं, कंपनी के प्रबंध निदेशक मुकेश आहूजा ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में कहा। हाल ही में, इसने अपने विविध इलेक्ट्रिक वाहन उपक्रमों का समर्थन करने के लिए टीआईआई और अन्य निवेशकों से 3,000 करोड़ का अपना लक्षित फंड जुटाया।

कार्यकारी अध्यक्ष एमएएम अरुणाचलम ने कहा, ₹जबकि ई3डब्ल्यू दक्षिणी बाजारों में अच्छा प्रदर्शन कर रहा है और वर्तमान में उत्तरी बाजार में भी अपनी पैठ बना रहा है, ई-एचसीवी ट्रक अपने बिक्री चक्र के शुरुआती चरण में हैं।"

वर्तमान में ई-ट्रैक्टर प्रदर्शन, बैटरी दक्षता और धीरज के लिए कठोर परीक्षण से गुजर रहे हैं। ई-ट्रैक्टर तीन वेरिएंट में आएंगे। ये सभी प्लेटफ़ॉर्म विशेष रूप से कृषि और ढुलाई की ज़रूरतों के लिए बनाए गए हैं। यह हर तरह से पारंपरिक ट्रैक्टरों से प्रतिस्पर्धा करेगा, एक आकर्षक विकल्प पेश करेगा। कंपनी ने कहा कि वे लागत-प्रभावशीलता, शून्य उत्सर्जन और शोर-मुक्त संचालन की विशेषता रखते हैं, जो स्वैपेबल, रिचार्जेबल बैटरी द्वारा संचालित होते हैं।

शुरुआत में इसे चार राज्यों गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु में लॉन्च किया जाएगा, जिसमें एक मजबूत डीलर और सेवा नेटवर्क विकसित किया जा रहा है। लॉन्च के बाद प्रचार प्रयासों के बाद मांग को पूरा करने के लिए, चेन्नई में एक अत्याधुनिक प्लांट स्थापित किया जा रहा है।

चेन्नई के पास गुम्मिडिपुंडी में 2T से 3.5T की रेंज में ईएससीवी बनाने के लिए एक नई विनिर्माण सुविधा आ रही है। वाहन में रेंज और उपयोगिता प्रस्ताव होने की उम्मीद है। पहला संस्करण वर्तमान में परीक्षण चरण में है। प्रोटोटाइप का कठोर मूल्यांकन किया जा रहा है और उम्मीद है कि इसे वित्त वर्ष 25 की दूसरी तिमाही में बाजार में पेश किया जाएगा, उसके बाद नए वेरिएंट का विकास किया जाएगा।

टीआईआई का मोबिलिटी डिविजन खास तौर पर घरेलू बाजार के लिए ई-साइकिलें पेश करने की योजना बना रहा है। इन उत्पादों का परीक्षण किया जा रहा है और इन्हें वित्त वर्ष 2025 में घरेलू बाजार में लॉन्च करने की योजना है।

इस शहर के लोग इलेक्ट्रिक बसों में सफर करने के लिए तैयार हो जाएं, सरकार ने चार्जिंग स्टेशनों के लिए तैयार किया है खाका

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा सरकार ने हाल ही में राज्य में इलेक्ट्रिक बसों की शुरुआत की है। यह पहल राज्य की सड़क परिवहन व्यवस्था में एक नया अध्याय जोड़ रही है। इस योजना के तहत जल्द ही रेवाड़ी में भी इलेक्ट्रिक बसें दिखाई देंगी। सरकार का लक्ष्य है कि अगले दो दिनों में ये बसें रेवाड़ी की सड़कों पर दौड़ती दिखाई दें।

प्राप्त जानकारी के अनुसार रेवाड़ी में तीन एकड़ जमीन पर नया चार्जिंग स्टेशन बनाया जाएगा। यह चार्जिंग स्टेशन प्रजापति चौक स्थित नए बस स्टैंड के पास बनाया जाएगा। नए बस स्टैंड की योजना जल्द ही अमल में लाई जाएगी। इससे रेवाड़ी में इलेक्ट्रिक बसों के संचालन में सुविधा होगी।

हरियाणा में इलेक्ट्रिक बसें शुरू करने का यह कदम प्रदूषण कम करने और पर्यावरण को बचाने की दिशा में महत्वपूर्ण है। राज्य सरकार पहले ही पानीपत और यमुनानगर में इलेक्ट्रिक बस सेवा शुरू कर चुकी है। पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने पानीपत में बसों का उद्घाटन किया और लोगों को मुफ्त बस सेवा का लाभ दिया। यह पहल प्रदूषण कम करने और लोगों को बेहतर परिवहन विकल्प देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सरकार की योजना के मुताबिक पहले चरण में पानीपत, यमुनानगर, अंबाला, करनाल, सोनीपत, रोहतक, हिसार और रेवाड़ी में इलेक्ट्रिक बस सेवा शुरू की जाएगी। इन शहरों में इलेक्ट्रिक बस सेवा शुरू होने से लोगों को स्वच्छ और पर्यावरण अनुकूल परिवहन की सुविधा मिलेगी।

हरियाणा सरकार ने 375 इलेक्ट्रिक बसें खरीदी हैं। इन बसों के इस्तेमाल से बढ़ते प्रदूषण को नियंत्रित करने और पर्यावरण की रक्षा करने में मदद मिलेगी। ये बसें 9 प्रमुख शहरों में शुरू हो जाएंगी, जिससे लोगों को और भी बेहतर परिवहन सेवाएं मिलेंगी।

इलेक्ट्रिक बसों के इस्तेमाल से न केवल प्रदूषण कम करने में मदद मिलेगी, बल्कि इससे पेट्रोल और डीजल की खपत भी कम होगी। यह कदम सरकार की दीर्घकालिक पर्यावरण योजनाओं का हिस्सा है। इन बसों के लिए बनाए जा रहे चार्जिंग स्टेशनों की स्थिति को देखकर साफ है कि सरकार ने इस योजना के क्रियान्वयन पर गंभीरता से काम किया है।

टेस्ला आपूर्तिकर्ता ने गीगा टेक्सास के पास 28 मिलियन डॉलर की सुविधा की घोषणा की

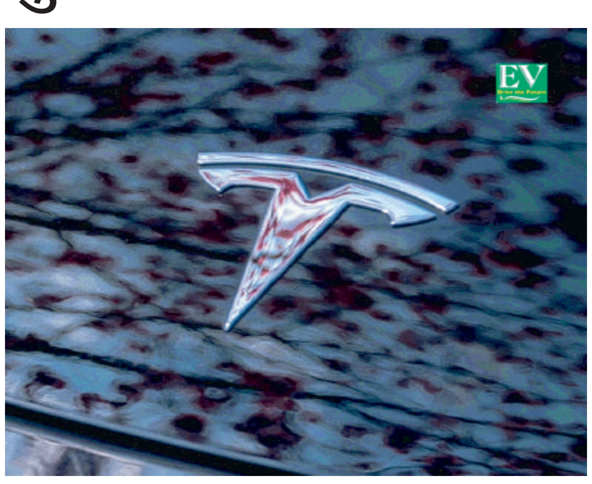

परिवहन विशेष न्यूज

कोरिया स्थित टेस्ला सप्लायर को टेक्सास में 28 मिलियन डॉलर की लागत से एक संयंत्र बनाने की मंजूरी मिल गई है, जो इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) निर्माता की ट्रैविस काउंटी स्थित गीगाफैक्ट्री से ज्यादा दूर नहीं है।

टेक्सास के बुडा में सिटी काउंसिल के सदस्यों ने इस सप्ताह कोरिया स्थित टेस्ला आपूर्तिकर्ता फ्यूट्रॉनिक को शहर में अपना पहला अमेरिकी स्थान बनाने की मंजूरी दे दी, जैसा कि ऑस्टिन बिजनेस जर्नल की एक रिपोर्ट में विस्तृत रूप से बताया गया है । शहर ने कंपनी को हेस काउंटी कमिश्नर कोर्ट से अतिरिक्त प्रोत्साहन के साथ-साथ कर प्रोत्साहन में $ 600,000 की मंजूरी दी।

ग्रेटर सैन मार्कोस पार्टनरशिप के अनुसार, फ्यूट्रॉनिक 2899 बिजनेस पार्क ड्राइव पर 66,000 वर्ग फुट की इमारत खरीदना चाहता है, जो पहले फैट क्वार्टर शॉप एलएलसी का घर था। यह साइट गीगा टेक्सास से लगभग 20 मिनट की दूरी पर है, और इससे क्षेत्र में 350 से अधिक नौकरियाँ आने की उम्मीद है।

रिपोर्ट के अनुसार, कुल मिलाकर कंपनी द्वारा इस परियोजना में 17 मिलियन डॉलर का निवेश किए जाने की उम्मीद है, साथ ही भवन की खरीद पर लगभग 11 मिलियन डॉलर खर्च होने का अनुमान है।

बुडा आर्थिक विकास निगम (बीईडीसी) के सहायक निदेशक शैनन मुमले ने कहा, "बुडा के पास कुशल कार्यबल है, और उसका स्कूल जिला मजबूत सीटीई (कैरियर और तकनीकी शिक्षा) कार्यक्रम प्रदान करता है, इसलिए यह न केवल हमारी अर्थव्यवस्था के लिए बल्कि परिवारों और भावी पीढ़ियों के लिए भी एक वास्तविक परिसंपत्ति है।"

फ्यूट्रॉनिक वैश्विक ऑटोमोटिव कंपनियों के लिए एक्ट्यूएटर्स, मोटर और अन्य नियंत्रक उपकरण बनाती है, जैसा कि कंपनी की वेबसाइट पर देखा जा सकता है। हालाँकि टेस्ला के अधिकांश आपूर्तिकर्ता निजी हैं और गैर-प्रकटीकरण समझौतों (NDA) के तहत हैं, लेकिन ग्रेटर सैन मार्कोस पार्टनरशिप द्वारा फ्यूट्रॉनिक को ऑटोमेकर के आपूर्तिकर्ताओं में से एक के रूप में पुष्टि की गई थी।

कई टेस्ला आपूर्तिकर्ताओं ने अमेरिका में नई परियोजनाओं की योजना की घोषणा की है, जिसमें हाल ही में उत्तरी कैरोलिना में पीडमोंट लिथियम परियोजना को मंजूरी देना भी शामिल है, जहां कंपनी लिथियम खनन सुविधा बनाने की योजना बना रही है ।

पटना के शहरी क्षेत्र में आॅटो और ई-रिक्शा के लिए होगा अलग जोन, परिवहन विभाग ने मांगी आपत्तियां और सुझाव

परिवहन विशेष न्यूज

पटना के शहरी इलाकों में अब ऑटो और ई-रिक्शा चालकों की मनमानी नहीं चलेगी। सड़कों की क्षमता के अनुसार ऑटो और ई-रिक्शा का निबंधन किया जाएगा। इसके साथ ही रूट भी तय किए जाएंगे। ऑटो और ई-रिक्शा के सभी रूटों को अलग-अलग जोनों में बांटा जाएगा। प्रत्येक जोन के लिए अलग कलर कोड निर्धारित किया जाएगा ताकि हर रूट पर चलने वाले आटो की आसानी से पहचान हो सके।

परिवहन विभाग के अनुसार, पटना समेत राज्य के सभी प्रमंडलीय और जिला मुख्यालयों में जल्द ही नई व्यवस्था लागू की जाएगी। आटो और ई-रिक्शा के परिचालन को विनियमित करने के लिए परिवहन विभाग ने प्रारूप तय कर दिया है। विभाग ने गुरुवार को इसकी अधिसूचना जारी कर 30 दिनों के अंदर आपत्ति और सुझाव मांगे हैं। शहरी क्षेत्र में आटो और ई-रिक्शा के पार्किंग की भी व्यवस्था की जाएगी। इसके लिए प्रत्येक जोन में रूटों की टैगिंग करते हुए संबंधित नगर निकाय के समन्वय से पार्किंग स्थल चिह्नित किए जाएंगे। आटो रिक्शा और ई-रिक्शा के संबंधित जोन एवं रूट के साथ पुलिस थानों को भी टैग किया जाएगा।

परिवहन विभाग के अनुसार बिहार टैक्सी एग्रीगेटर परिचालन निदेश, 2019 के अंतर्गत अधिकृत सेवा प्रदाताओं को भी आटो रिक्शा और ई-रिक्शा के परिचालन के लिए लाइसेंस लेना अनिवार्य होगा। विभाग की योजना भविष्य में क्यूआर कोड विकसित करने की भी है। इस क्यूआर कोड को आटो और ई-रिक्शा पर अंकित किया जाएगा। इसे स्कैन करने पर आटो रिक्शा और ई-रिक्शा के चालक से जुड़ी सारी जानकारी सवारियों के साथ ट्रैफिक पुलिस पदाधिकारियों को भी मिल जाएगी।

परिवहन विभाग के अनुसार, नई व्यवस्था को लागू करने के लिए आटो चालकों से आवेदन आमंत्रित किए जाएंगे। आनलाइन आवेदन पर भी विचार किया जा रहा है। आवेदनों की समीक्षा के लिए कमेटी बनाई जाएगी, जो सक्षम प्राधिकार होगी। आटो रिक्शा और ई-रिक्शा के मालि को खुद चालक होंगे और वैध परमिटधारी होंगे, उन्हें योजना के तहत प्राथमिकता दी जाएगी। किसी जोन या रूट के लिए निर्धारित रिक्तियों से अधिक संख्या में आवेदन मिलने पर लाटरी से अंतिम निर्णय लिया जाएगा।

योजना को लागू करने के लिए प्रमंडल और जिला स्तर पर कमेटी का गठन किया जाएगा। प्रमंडलीय मुख्यालय वाले जिलों में प्रमंडलीय आयुक्त सह क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकार के अध्यक्ष नोडल पदाधिकारी होंगे। वहीं जिलों में डीएम नोडल पदाधिकारी बनाए जाएंगे। डीएम कमेटी के अध्यक्ष होंगे जबकि उप विकास आयुक्त, एसपी या ट्रैफिक डीएसपी, सिविल सर्जन, जिला परिवहन पदाधिकारी, अपर जिला परिवहन पदाधिकारी और मोटरयान निरीक्षक सदस्य होंगे। आटो और ई-रिक्शा यूनियन के प्रतिनिधि आमंत्रित सदस्य होंगे।

भारत 'हरित ऊर्जा विकास का इंजन' बनेगा

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्रीय मंत्री प्रल्हाद जोशी ने शुक्रवार, 19 जुलाई को कहा कि भारत दुनिया के लिए हरित ऊर्जा विकास का इंजन होगा, क्योंकि देश में 2030 तक 100 गीगावाट तक की इलेक्ट्रोलाइजर विनिर्माण क्षमता स्थापित होने की उम्मीद है।

नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री ने यह टिप्पणी कर्नाटक के डोड्डबल्लापुर में एक निजी कंपनी के इलेक्ट्रोलाइजर विनिर्माण संयंत्र का उद्घाटन करते हुए की।

उन्होंने कहा ₹भारत में दुनिया में हरित ऊर्जा के विकास का वाहक बनने की क्षमता है। हरित हाइड्रोजन की मांग भारत में इलेक्ट्रोलाइजर की मांग को बढ़ाएगी। 2030 तक, यह संभावना है कि भारत 60 गीगावाट-100 गीगावाट की इलेक्ट्रोलाइजर क्षमता स्थापित कर लेगा।"

उनकी टिप्पणियां महत्वपूर्ण हैं क्योंकि सरकार ने 5 मिलियन मीट्रिक टन स्थापित हरित हाइड्रोजन मिशन क्षमता का लक्ष्य रखा है। इलेक्ट्रोलाइज़र हरित हाइड्रोजन के निर्माण में उपयोग किया जाने वाला एक प्रमुख घटक है।

जोशी ने कहा कि हरित हाइड्रोजन परिवहन, इस्पात निर्माण और यहां तक कि भारी उद्योग जैसे क्षेत्रों को कार्बन मुक्त करने की कुंजी है। उन्होंने कहा कि स्वच्छ ऊर्जा वाहनों को चला सकती है, कारखानों को ईंधन दे सकती है और घरों को रोशन कर सकती है, और यह सब हानिकारक कार्बन पदचिह्न छोड़े बिना किया जा सकता है।

समग्र नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र पर बोलते हुए उन्होंने कहा, ₹भारत ने इस क्षेत्र में कई उपलब्धियां हासिल की हैं। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 2014 में 76 गीगावाट से 2.5 गुना बढ़कर जून 2024 तक 195 गीगावाट से अधिक हो गई है।₹

मंत्री ने कहा कि सौर ऊर्जा क्षमता में भारी उछाल आया है, जो 2014 में मात्र 3 गीगावाट थी, जो अब बढ़कर 85 गीगावाट से अधिक हो गई है, जबकि इस दशक में पवन ऊर्जा क्षमता 21 गीगावाट से बढ़कर 46 गीगावाट से अधिक हो गई है।

क्या बजट दीवार पर लिखी चेतावनियों का जवाब देगा

-पी. चिदम्बरम

अर्थव्यवस्था के कई अन्य ईमानदार शुभचिंतकों की तरह, मैं हमेशा वार्षिक केंद्रीय बजट की पूर्व संध्या पर पढ़ता, ङ्कूषचतन करता और लिखता हूं और बजट के दिन अक्सर संसद भवन से निराश होकर निकलता हूं।

अर्थव्यवस्था के कई अन्य ईमानदार शुभचिंतकों की तरह, मैं हमेशा वार्षिक केंद्रीय बजट की पूर्व संध्या पर पढ़ता, ङ्कूषचतन करता और लिखता हूं और बजट के दिन अक्सर संसद भवन से निराश होकर निकलता हूं। इसके बाद, मैं लोगों के पास जाता हूं और विधायकों, अर्थशास्त्रियों, व्यापारियों, किसानों, महिलाओं, युवाओं और सबसे बढ़कर पार्टी कार्यकत्र्ताओं सहित विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से बात करता हूं। अंतिम नाम वाले लोग मुझे जमीनी स्तर से, खास तौर पर स्थानीय बाजारों में होने वाली हलचल से फीडबैक देते हैं। पिछले 10 वर्षों के दौरान लगभग हर साल, मैंने पाया कि बजट की 'घोषणाएं' 48 घंटों में बिना किसी निशान के गायब हो जाती हैं, और चर्चा बंद हो जाती है।

कठिन चुनौतियां : निराशाजनक नतीजों का मुख्य कारण यह है कि बजट बनाने वाले वास्तविकता से संपर्क खो देते हैं और आ॰थक स्थिति का वस्तुपरक आकलन करने में विफल हो जाते हैं। आइए 2024-25 को लें, जिसके लिए 23 जुलाई, 2024 को बजट पेश किया जाएगा। आर्थिक स्थिति का वस्तुपरक मूल्यांकन करने पर पता चलेगा कि बेरोजगारी युवाओं, परिवारों और सामाजिक शांति के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। कुछ दर्जन रिक्तियों या कुछ हजार पदों के लिए, लाखों उम्मीदवार आवेदन करते हैं और परीक्षा देते हैं या साक्षात्कार देते हैं। प्रश्नपत्र लीक हो जाते हैं। रिश्वत दी जाती है। कुछ परीक्षाएं या साक्षात्कार अंतिम समय में रद्द कर दिए जाते हैं, जिससे बहुत परेशानी होती है। ये विस्फोटक बेरोजगारी की स्थिति के प्रत्यक्ष परिणाम हैं। सी.एम.आई.ई. के अनुसार, अखिल भारतीय बेरोजगारी दर 9.2 प्रतिशत है। कृषि (वास्तव में, छिपी हुई बेरोजगारी), निर्माण (अनियमित) और गिग इकोनॉमी (असुरक्षित) में तथाकथित नौकरियों में वृद्धि हुई है।

युवा नियमित नौकरी चाहते हैं, जिसमें कार्यकाल की थोड़ी सुरक्षा और उचित वेतन हो। ऐसी नौकरियां सरकार और सरकार द्वारा नियंत्रित निकायों में उपलब्ध हैं। 2024 की शुरूआत में, ऐसे पदों पर 10 लाख रिक्तियां थीं, लेकिन इस बात का कोई सबूत नहीं है कि केंद्र सरकार रिक्तियों को भरने के लिए उत्सुक है। ऐसी नौकरियां जीवंत विनिर्माण क्षेत्र में तथा वित्तीय सेवाओं, सूचना प्रौद्योगिकी, नौवहन, हवाई परिवहन, आतिथ्य, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, तथा अनुसंधान एवं विकास जैसी उच्च मूल्य वाली सेवाओं में भी सृजित की जा सकती हैं। विनिर्माण उत्पादन सकल घरेलू उत्पाद के 15 प्रतिशत पर स्थिर हो गया है, क्योंकि भारतीय प्रवर्तकों ने निवेश करने में अत्यधिक अनिच्छा दिखाई है। विनिर्माण तथा उच्च मूल्य वाली सेवाओं के तीव्र विस्तार के लिए आर्थिक नीतियों में आमूलचूल परिवर्तन तथा विदेशी निवेश और विदेशी व्यापार को साहसपूर्वक अपनाने की आवश्यकता है। मूल्य वृद्धि या मुद्रास्फीति दूसरी बड़ी चुनौती है।

सरकार द्वारा मापी गई थोक मूल्य मुद्रास्फीति 3.4 प्रतिशत के उच्च स्तर पर है। सी.पी.आई. मुद्रास्फीति 5.1 प्रतिशत तथा खाद्य मुद्रास्फीति 9.4 प्रतिशत है। चूंकि भारत एक साझा बाजार नहीं है, जहां देश के हर हिस्से में वस्तुओं और सेवाओं का मुक्त प्रवाह हो, इसलिए दरें राज्य दर राज्य तथा राज्य के भीतर, अच्छी तरह से जुड़े जिलों से लेकर गरीब और दूर-दराज के जिलों तक भिन्न-भिन्न हैं। शायद आबादी के शीर्ष 20-30 प्रतिशत को छोड़कर, हर परिवार मुद्रास्फीति से आहत है। कुछ लोग चिड़चिड़े हैं, तो अधिकांश नाराज हैं। बजट भाषण और आबंटन में बेरोजगारी और महंगाई से निपटने के लिए विश्वसनीय कदमों की रूप-रेखा तैयार करने के बारे में आपकी संतुष्टि के आधार पर, आप 50 अंक तक आबंटित कर सकते हैं।

2 अन्य चुनौतियां : शेष 50 अंक शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और अन्य लोगों की प्राथमिकताओं के शीर्षकों के अंतर्गत आबंटित किए जा सकते हैं। जब तक हमारे पास घटिया शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा होगी, तब तक भारत एक विकसित देश नहीं बन सकता। शिक्षा, विशेष रूप से स्कूली शिक्षा, निस्संदेह व्यापक है, लेकिन खराब गुणवत्ता की है। वास्तविकता यह है कि एक बच्चा औसतन 7 से 8 साल एक स्कूल में बिताता है। लगभग आधे बच्चे किसी भी भाषा में एक साधारण पाठ पढने या लिखने में असमर्थ हैं और संख्यात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण हैं। वे किसी भी कुशल नौकरी के लिए उपयुक्त नहीं हैं। हजारों स्कूलों में शिक्षकों, कक्षाओं, शौचालयों और शिक्षण सहायक सामग्री की भारी कमी है, पुस्तकालयों या प्रयोगशालाओं की तो बात ही छोड़िए। केंद्र सरकार को इन मूलभूत समस्याओं को दूर करने के लिए राज्यों को प्रेरित करना चाहिए और उनकी मदद करनी चाहिए, न कि विवादास्पद एन.ई.पी. या घोटालों से भरे एन.टी.ए./एन.ई.ई.टी. को आगे बढ़ाने में अपने संसाधनों और समय को बर्बाद करना चाहिए।

स्वास्थ्य सेवा बेहतर है लेकिन पर्याप्त नहीं है। सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा मात्रात्मक रूप से बढ़ रही है लेकिन गुणवत्ता में नहीं। जेब से किया जाने वाला खर्च अभी भी कुल स्वास्थ्य व्यय का लगभग 47 प्रतिशत है (एन.एच.ए.ई., स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय)। निजी स्वास्थ्य सेवा मात्रा और गुणवत्ता दोनों में बढ़ रही है, लेकिन अधिकांश लोगों की पहुंच से बिल्कुल बाहर है। कुल मिलाकर, डाक्टरों, नर्सों, चिकित्सा तकनीशियनों और नैदानिक उपकरणों और मशीनों की भारी कमी है। स्वास्थ्य सेवा पर केंद्र सरकार का खर्च सकल घरेलू उत्पाद के अनुपात में 0.28 प्रतिशत और कुल व्यय के अनुपात में 1.9 प्रतिशत (15 जुलाई, 2024 का टी.ओ.आई.) घटकर रह गया है। सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा से जनता का संतोष कम है।

कड़ा तमाचा : अन्य लोगों की प्राथमिकताएं स्थिर मज़दूरी, बढ़ता घरेलू कर्ज़, मजदूरी के सामान की घटती खपत, एम.एस.पी. के लिए कानूनी गारंटी, शिक्षा ऋण का बोझ और अग्निपथ योजना हैं। इन चुनौतियों के समाधान हैं न्यूनतम मजदूरी 400 रुपए, कानूनी रूप से गारंटीकृत एम.एस.पी., शिक्षा ऋण माफी और अग्निपथ का उन्मूलन। इन मुद्दों की उपेक्षा, 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा द्वारा जीती गई सीटों की संख्या में विनाशकारी गिरावट का कारण बनी। भाजपा पश्चाताप नहीं कर रही है न ही सार्वजनिक बयानों के अनुसार, कख्या यह अपने मॉडल क्रोनी कैपिटलिस्ट, ट्रिकल-डाऊन, पूंजी पक्षपाती और संरक्षणवादी पर पुनॢवचार करने को तैयार है। जुलाई में 13 विधानसभा उपचुनावों में लोगों ने भाजपा को जोरदार तमाचा मारा आई.एन.डी.आई.ए. ब्लॉक ने उनमें से 10 जीते और अपने वोट शेयर में नाटकीय रूप से वृद्धि की (17 जुलाई, 2024 को द हिंदू)। क्या बजट दीवार पर लिखी चेतावनियों का जवाब देगा?

संपादक की कलम से

'मानव अंगों के व्यापारी डाक्टर व दलाल' 'गरीबों के अंग बेच-कर रहे मोटी कमाई'

भारत में 'मानव अंग प्रत्यारोपण कानून-1994' द्वारा मानव अंगों के व्यावसायिक लेन-देन को दंडनीय अपराध घोषित किए जाने के बावजूद इस कारोबार में संलिप्त डाक्टरों, अधिकारियों व दलालों के गिरोहों ने इसे धन कमाने का जरिया बना लिया है। ये गिरोह अत्यंत सुनियोजित तरीके से गरीब और जरूरतमंद लोगों को बहुत मामूली रकम पर अपने अंग बेचने को तैयार कर लेते हैं और जरूरतमंदों को भारी रकमों पर बेचते हैं। इसी वर्ष चंद ऐसे ही गिरोहों का पता चला है। इनमें से एक गिरोह बंगलादेश के गरीब लोगों को गुर्दा बेचने के लिए तैयार करके गुरुग्राम लाता और उन्हें कुछ दिन वहां ठहराने के बाद किडनी प्रत्यारोपण के लिए जयपुर ले जाता और वहां के 2 बड़े अस्पतालों में उनके स्वस्थ अंग निकाल कर अमीर व्यक्तियों के शरीर में लगा दिए जाते।

1 अप्रैल को 'भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो' ने अंग प्रत्यारोपण के लिए फर्जी नो ऑब्जैक्शन सर्टिफिकेट (एन.ओ.सी.) जारी करने की एवज में रिश्वत लेने के आरोप में राजस्थान में जयपुर स्थित 'सवाई माधोसिंह अस्पताल' (एस.एम.एस.) के एक अधिकारी से एन.ओ.सी. लेने के बदले में उक्त अधिकारी तथा उसे 70-70 हजार रुपए रिश्वत देने के आरोप में 2 निजी अस्पतालों के अंग प्रत्यारोपण कोओर्डिनेटरों को गिरफ्तार किया। इस घोटाले के तार दूसरे देशों से भी जुड़े होने और सवाई माधो सिंह अस्पताल में बनी कमेटी के नाम से पिछले 3 वर्षों में नेपाल, बंगलादेश और कम्बोडिया सहित विभिन्न देशों के 800 से अधिक नागरिकों के नाम से विभिन्न अस्पतालों को नो ऑब्जैक्शन सर्टिफिकेट (एन.ओ.सी.) जारी करने का खुलासा हुआ है। इसी वर्ष मई में पुलिस ने केरल से जुड़े एक अंतर्राष्ट्रीय अंग तस्करी रैकेट का पर्दाफाश किया था। गिरफ्तारियों और जांच के दौरान पता चला कि यह गिरोह हैदराबाद और बेंगलुरु के आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को मोटी रकम का लालच देकर अंगदान करने के लिए विदेश ले जाता था।

इस अंग तस्करी रैकेट के एक संदिग्ध सदस्य 'सबिथ नसर' को 19 मई को कोच्चि हवाई अड्डे से एक अन्य व्यक्ति के साथ गिरफ्तार किया गया। आरोप है कि 'सबिथ नसर' अंग निकालने के लिए 20 लोगों को भारत से ईरान लेकर गया, जिनकी वहां के एक प्राइवेट अस्पताल में किडनी निकाली गई। बताया जाता है कि ईरान ले जाए गए कुछ लोगों की वहीं मौत भी हो गई। और अब अनेक स्थानों पर छापेमारी के बाद पुलिस ने दिल्ली और इसके आसपास के इलाकों (एन.सी.आर.), पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश और गुजरात के कई अस्पतालों में जाली दस्तावेजों के आधार पर एक अंतर्राज्यीय किडनी प्रत्यारोपण गिरोह का भंडाफोड़ करके दिल्ली के अपोलो अस्पताल की एक डाक्टर सहित 15 लोगों को पकड़ा है जिनमें किडनी दान करने और प्राप्त करने वाले भी शामिल हैं।

पुलिस उपायुक्त (अपराध) अमित गोयल के अनुसार गिरोह के सदस्यों ने किडनी दान करने वालों को 5 लाख से 6 लाख रुपए के बीच भुगतान करने का वायदा किया लेकिन उन्होंने किडनी प्राप्त करने वालों से 35 से 40 लाख रुपए तक वसूल किए। इस गिरोह ने विभिन्न राज्यों के 11 अस्पतालों में किडनी प्रत्यारोपण करवाए हैं। पुलिस ने इनके कब्जे से 34 फर्जी स्टैम्प, 17 मोबाइल फोन, 2 लैपटॉप, 9 सिम, एक लग्जरी कार, 1.50 लाख रुपए नकद, जाली दस्तावेज और मरीजों, प्राप्तकत्र्ताओं तथा दानकत्र्ताओं की फाइलें भी बरामद की हैं।

उक्त उदाहरणों से स्पष्टï है कि आज देश में मानव अंगों का अवैध रूप से व्यापार करने वाले तत्व किस कदर सक्रिय हैं। वे न सिर्फ सरकार द्वारा तय किए गए अंगों का व्यापार न करने के कानून का उल्लंघन कर रहे हैं बल्कि उनकी करतूतों की वजह से आर्थिक रूप से कमजोर लोगों का शोषण और उनकी मौतें भी हो रही हैं।

चिंतन

अमरीकी राजनीति में उम्र पर छिड़ी बहस

जब नवंबर में अमरीकी मतदान के लिए जाएंगे तो उन्हें जो बाइडेन और डोनाल्ड ट्रम्प के बीच एक परिचित विकल्प का सामना करना पड़ेगा जो 2020 के चुनाव के वही दावेदार थे।

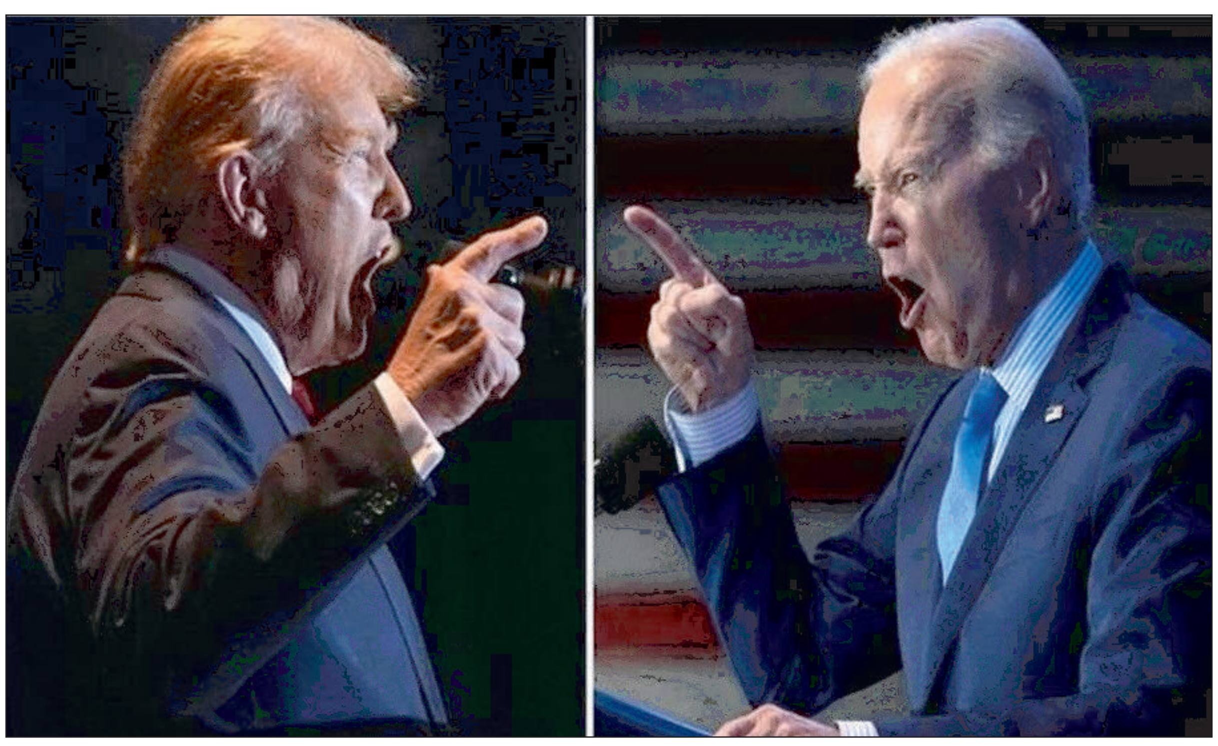

जब नवंबर में अमरीकी मतदान के लिए जाएंगे तो उन्हें जो बाइडेन और डोनाल्ड ट्रम्प के बीच एक परिचित विकल्प का सामना करना पड़ेगा जो 2020 के चुनाव के वही दावेदार थे। यह निर्णय मुश्किलों से भरा है क्योंकि मतदाता 2 खराब विकल्पों में से बेहतर को चुनने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

मौजूदा राष्ट्रपति बाइडेन को अपनी उम्र और बहस के प्रदर्शन को लेकर जांच का सामना करना पड़ा है, जबकि ट्रम्प कानूनी परेशानियों के बावजूद समर्थन का एक मजबूत आधार बनाए हुए हैं। ट्रम्प को निशाना बनाकर की गई गोलीबारी की घटना जैसी हालिया घटनाओं ने राजनीतिक परिदृश्य को और अधिक ध्रुवीकृत कर दिया है, जिससे अमरीका के नेताओं की उम्र और फिटनैस पर बहस तेज हो गई है। जो बाइडेन को डैमोक्रेटिक प्राइमरी में कोई खास विरोध का सामना नहीं करना पड़ा, हालांकि जून में खराब बहस के प्रदर्शन ने उनकी फिटनैस को लेकर चिंताएं पैदा कीं।

ट्रम्प ने 2020 के चुनाव को पलटने के अपने कथित प्रयासों से संबंधित कानूनी मुद्दों का सामना करने के बावजूद आसानी से रिपब्लिकन नामांकन हासिल कर लिया। उनका अभियान सीमा सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखता है, साथ ही उनके सामने आने वाली कानूनी चुनौतियों से संबंधित शिकायतों को भी संबोधित करता है। 13 जुलाई को पेनसिल्वेनिया में एक रैली में हुई गोलीबारी की घटना, जिसमें 20 वर्षीय युवक ने ट्रम्प पर गोली चलाई, जिससे वे मामूली रूप से घायल हो गए और एक राहगीर की मौत हो गई। यह घटना अमरीकी लोकतंत्र के लिए गंभीर चुनौतियों को उजागर करती है। इस घटना ने ट्रम्प के समर्थकों को उत्साहित कर दिया है, जो मानते हैं कि इससे नवंबर में उनके जीतने की संभावना बढ़ सकती है।

राष्ट्रपति बाइडेन अपनी उम्र और स्वास्थ्य को लेकर चिंताओं के बावजूद फिर से चुनाव चाहते हैं। उनके लंबे राजनीतिक करियर में 3 दशक से अधिक समय तक सीनेट में रहना और बराक ओबामा के अधीन उप-राष्ट्रपति के रूप में काम करना शामिल है। उनके राष्ट्रपति पद की अवधि में अमरीका को उच्च मुद्रास्फीति और अंतर्राष्ट्रीय चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। बाइडेन को सी.एन.एन. प्रैजीडैंशियल डिबेट के दौरान अपने कथित कमजोर और अनिश्चित प्रदर्शन के लिए काफी आलोचना का सामना करना पड़ा है, जिससे कई मतदाता यह सवाल उठा रहे हैं कि क्या वे राष्ट्रपति बनने के लिए बहुत बूढ़े हैं। नेताओं की उम्र को लेकर बहस तेज हो गई है, खास तौर पर राष्ट्रपति जो बाइडेन और डोनाल्ड ट्रम्प के बीच। अगर वे चुने जाते हैं, तो उद्घाटन दिवस पर बाइडेन 82 वर्ष के होंगे, जबकि ट्रम्प 78 वर्ष के होंगे।

अप्रैल 2024 की प्यू रिसर्च सैंटर की रिपोर्ट ने संकेत दिया कि केवल 15 प्रतिशत मतदाता राष्ट्रपति पद के लिए बाइडेन की शारीरिक फिटनैस के बारे में 'बहुत आश्वस्त' थे, जबकि 21 प्रतिशत मतदाता उनकी मानसिक फिटनैस के बारे में भी ऐसा ही महसूस करते हैं। शारीरिक फिटनैस के लिए ट्रम्प का आत्मविश्वास स्तर 36 प्रतिशत और मानसिक क्षमता के लिए 38 प्रतिशत अधिक था। संयुक्त राज्य अमरीका में औसत आयु लगभग 39 वर्ष है, फिर भी इसके कई शीर्ष नेता काफी अधिक उम्र के हैं। 81 वर्षीय राष्ट्रपति जो बाइडेन और 78 वर्षीय पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अमरीकी राजनीति में सबसे बुजुर्ग व्यक्तियों में से हैं। औसत अमरीकी सीनेटर 64 वर्ष का है।

2022 के एक सर्वेक्षण से पता चला है कि आधे से अधिक अमरीकियों का मानना है कि निर्वाचित अधिकारियों के लिए एक आयु सीमा होनी चाहिए, जिसमें 39 प्रतिशत ने सुझाव दिया कि यह सीमा 70 वर्ष होनी चाहिए। हालांकि उम्र बढऩे से याददाश्त जैसे संज्ञानात्मक कार्य प्रभावित हो सकते हैं, लेकिन यह निर्धारित करने के लिए कोई सार्वभौमिक सीमा नहीं है कि कोई व्यक्ति नेतृत्व के लिए कितना बूढ़ा है। आयुवाद, जो अक्सर वृद्ध लोगों की क्षमताओं को कमजोर करता है, एक व्यापक रूप से बहस का मुद्दा बना हुआ है। हालांकि, नेल्सन मंडेला और वॉरेन बफेट जैसे व्यक्ति यह प्रदर्शित करते हैं कि केवल उम्र ही किसी व्यक्ति की प्रभावशीलता को निर्धारित नहीं करती है और लोग अपने बुढ़ापे में भी सार्थक योगदान दे सकते हैं। अमरीकी संविधान के अनुसार राष्ट्रपति की आयु कम से कम 35 वर्ष होनी चाहिए, लेकिन कोई ऊपरी आयु सीमा नहीं है। सर्वेक्षण किए गए लगभग 80 प्रतिशत अमरीकी वयस्क संघीय निर्वाचित अधिकारियों के लिए ऊपरी आयु सीमा का समर्थन करते हैं।

भारत के अलावा, ब्राजील (लूला, 77), बंगलादेश (शेख हसीना, 76) और इंडोनेशिया (प्रबोवो सुबियांटो, 72) जैसे देशों का नेतृत्व भी 70 वर्ष से अधिक उम्र के लोग कर रहे हैं। इस प्रवृत्ति ने एक बहस को जन्म दिया है। कुछ लोग तर्क देते हैं कि वृद्ध नेता अनुभव और स्थिरता लाते हैं, जबकि अन्य चिंता करते हैं, वे युवा पीढ़ी की जरूरतों से दूर हो सकते हैं। जैसा कि हम नेतृत्व में उम्र की बहस को आगे बढ़ाते हैं, नेताओं की उम्र के बजाय उनके प्रदर्शन और प्रभावशीलता पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। जबकि उम्र बढऩे से संज्ञानात्मक कार्य प्रभावित हो सकते हैं, प्रभावी नेतृत्व क्षमता और अनुकूलनशीलता पर निर्भर करता है। प्रभावी नेताओं को यह भी पहचानना चाहिए कि कब पद छोडऩे और अगली पीढ़ी के लिए रास्ता बनाने का समय है।

मुस्लिम वोट बैंक के सौदागर

मौजूदा लोकसभा में मुस्लिम सांसदों की संख्या आजादी के बाद से दूसरी सबसे कम यानी सिर्फ 24 होगी। 2014 में यह आंकड़ा 22 सांसदों के साथ अब तक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया था, जब मुस्लिम वोटों की सबसे बड़ी लाभार्थी कांग्रेस चुनाव में लडख़ड़ा गई थी...

मौजूदा लोकसभा में मुस्लिम सांसदों की संख्या आजादी के बाद से दूसरी सबसे कम यानी सिर्फ 24 होगी। 2014 में यह आंकड़ा 22 सांसदों के साथ अब तक के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया था, जब मुस्लिम वोटों की सबसे बड़ी लाभार्थी कांग्रेस चुनाव में लडख़ड़ा गई थी। इसके बाद 2019 में यह मामूली रूप से बढ़कर गिनती 26 हो गई लेकिन फिर से घट गई।

कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने मुस्लिम हितों के संरक्षक के रूप में काम किया है और उनके वोटों से लाभ उठाया है। नतीजतन, मुस्लिम प्रतिनिधित्व सीधे तौर पर इन दलों की संभावनाओं से जुड़ा हुआ था। इस बार, जबकि कांग्रेस ने लोकसभा में अपनी सीटों की संख्या 52 से बढ़ाकर 99 कर ली और 'इंडिया' गठबंधन ने 234 सीटें हासिल कीं, मुस्लिम प्रतिनिधित्व में उसी अनुपात में वृद्धि नहीं हुई। इसके बजाय, इसमें भारी गिरावट आई। यह गिरावट इसलिए नहीं हुई क्योंकि मुसलमानों ने इन दलों को वोट नहीं दिया, बल्कि इसलिए कि उनके वोट हड़पने के बाद, इन दलों ने अनुपातिक रूप से टिकट देने से परहेज किया।

भाजपा ने केरल के मलप्पुरम से केवल एक मुस्लिम उम्मीदवार को मैदान में उतारा। लेकिन मुस्लिम वोट बैंक के सौदागरों- कांग्रेस, टी.एम.सी., सपा., राकांपा, राजद और कम्युनिस्टों ने 2019 में 115 के मुकाबले सिर्फ 78 मुस्लिम उम्मीदवार मैदान में उतारे। तुष्टीकरण की राजनीति के लिए मशहूर कांग्रेस ने 2019 में 36 के मुकाबले इस बार सिर्फ 19 मुस्लिम उम्मीदवार मैदान में उतारे। यही हाल अन्य पार्टियों का भी रहा- टी.एम.सी. ने 2019 में 13 के मुकाबले इस बार मुसलमानों को सिर्फ 6 सीटें दीं।

उत्तर प्रदेश में मुस्लिम वोटों की सबसे बड़ी लाभार्थी सपा ने भी संख्या 8 से घटाकर 4 कर दी। नतीजा यह हुआ कि 14 प्रतिशत आबादी (2011 की जनगणना) वाले समुदाय का प्रतिनिधित्व 18वीं लोकसभा में घटकर 4.4 प्रतिशत रह गया है। तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, ओडिशा और कई अन्य जगहों से इस समुदाय का एक भी प्रतिनिधि नहीं है। असदुद्दीन ओवैसी जैसे कुछ मुस्लिम नेता विभाजन के बाद भारतीय मुस्लिम नेतृत्व द्वारा मोहम्मद अली जिन्ना की मुस्लिम लीग जैसी अखिल भारतीय मुस्लिम पार्टी शुरू न करने के निर्णय पर अफसोस जताते हैं।

केरल में मुस्लिम लीग का एक अवशेष है, जिसने इस बार 3 सीटें जीती हैं, लेकिन वह भी ओवैसी की ए.आई.एम.आई.एम. की तरह एक क्षेत्रीय संगठन बना हुआ है। ओवैसी जैसे नेता विभाजन के 7 दशक बाद भी जिन्ना की मानसिकता को पालते हैं।

उत्सव की पेशकशः दोनों तर्क-भाजपा को दोष देना या मुसलमानों के लिए एक राष्ट्रीय राजनीतिक संगठन की मांग करना - यह प्रदॢशत करते हैं कि मुस्लिम समुदाय का नेतृत्व अपनी परेशानियों के वास्तविक कारणों को समझने में असमर्थ है। 2024 का लोकसभा चुनाव इस बात का ताजा उदाहरण है कि मुस्लिम समुदाय ध्रुवीकरण की राजनीति से बाहर नहीं आया है। टिप्पणीकारों ने इसे भाजपा को हराने के लिए 'रणनीतिक मतदान' बताया है, जिससे समुदाय के वोटों के सौदागरों को मदद मिलती है, लेकिन समुदाय को नहीं। समुदाय एक अखंड नहीं है। मुस्लिम समुदाय के लगभग 95 प्रतिशत लोग अजलाफ और अरजाल हैं, जबकि शेष 5 प्रतिशत अशरफ हैं। अशरफ खुद को भारत में शुरूआती मुस्लिम प्रवासियों के वंशज मानते हैं, अजलाफ और अरजाल ओ.बी.सी. और दलित समुदायों से हिंदू धर्म में धर्मांतरित हुए

थे। साथ में, उन्हें एक फारसी नाम 'पसमांदा' से पुकारा जाता है जो पीछे छूट गए।

भाजपा ने पसमांदाओं के विकास और सामाजिक सरोकारों-जातिगत भेदभाव, आ॰थक और शैक्षिक पिछड़ापन आदि को बढ़ावा देना पसंद किया। 2022 में हैदराबाद में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पार्टी कार्यकत्र्ताओं से पसमांदा मुसलमानों तक पहुंचने का आह्वान किया और उन्होंने प्रमुख पसमांदा नेताओं के साथ कई बैठकें कीं। दिसंबर 2022 में दिल्ली में निगम चुनावों के दौरान, भाजपा ने 4 पसमांदा उम्मीदवारों को मैदान में उतारा। यू.पी. में, एक पसमांदा मुस्लिम अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री है। पिछले साल, राज्य में एक उप-चुनाव में, भाजपा के सहयोगी अपना दल द्वारा मैदान में उतारे गए एक पसमांदा उम्मीदवार ने सपा के हिंदू उम्मीदवार को हराकर जीत हासिल की। आम चुनावों की दौड़ में भाजपा ने 'मोदी मित्रों' मोदी के दोस्तों को शामिल करके पसमांदा लोगों तक अपनी पहुंच जारी रखी।

इस साल की शुरूआत में अमरीका स्थित कार्नेगी एंडोमैंट द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण में यह निष्कर्ष निकला कि 2017 में यू.पी. विधानसभा चुनाव के समय तक, 12.6 प्रतिशत सामान्य श्रेणी के मुसलमानों और 8 प्रतिशत पसमांदा मुसलमानों ने भाजपा का समर्थन किया था। 2022 के विधानसभा चुनाव के समय तक, भाजपा के लिए पसमांदा समर्थन बढ़ गया। दुर्भाग्य से, हाल के संसदीय चुनावों ने एक बार फिर साबित कर दिया कि मुस्लिम राजनीति को सांप्रदायिकता से मुक्त करने के भाजपा के प्रयास बहुत आगे नहीं बढ़ पाए। भाजपा के कल्याणकारी प्रस्तावों को त्यागने में मुस्लिम समुदाय के हितों की वास्तविक हार है। इसके लिए गंभीर आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता है। (लेखक इंडिया फाऊंडेशन के अध्यक्ष और आर.एस.एस. से जुड़े हैं।) साभार एक्सप्रैस न्यूज

2050 तक भारत में दोगुनी हो जाएगी बुजुर्गों की आबादी, क्या ये चिंता की बात है?

परिवहन विशेष न्यूज

2050 तक भारत की बुजुर्ग आबादी दोगुनी हो सकती है। ऐसे में बुजुर्गों के लिए खास नीतियां बनाने की जरूरत है ताकि उन्हें स्वास्थ्य सेवा आवास और पेंशन मिल सके। इसकी जरूरत खासकर बुजुर्ग महिलाओं को रहेगी जो बुढ़ापे में अकेली पड़ सकती हैं। उनके लिए गरीबी बड़ी समस्या रहेगी। उन्हें ध्यान में रखकर अभी से नीतियां बनाने की जरूरत है।

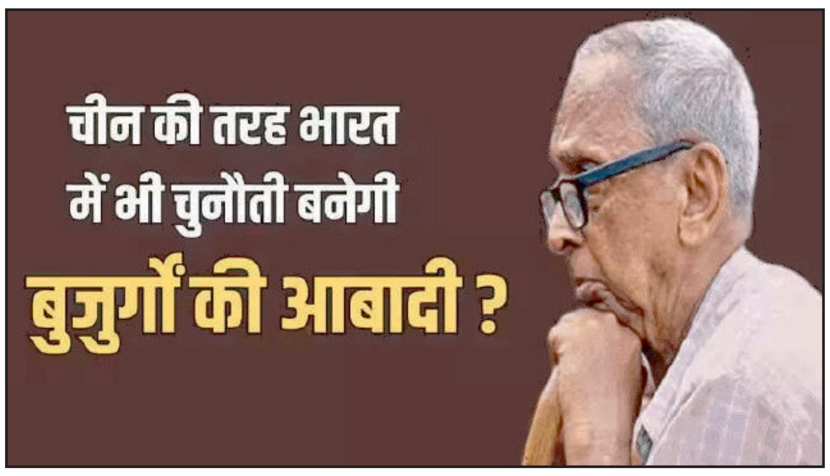

नई दिल्ली। बिजनेस डेस्क, नई दिल्ली। केंद्र सरकार भारत को साल 2047 तक विकसित बनाने का लक्ष्य लेकर चल रही है। इस दिशा में नीतिगत काम जोरशोर से हो रहे हैं। लेकिन, सरकार के लक्ष्य के मुताबिक जब तक भारत विकसित बनेगा, उस समय कुछ चुनौतियां भी खड़ी मिलेंगी। इनमें से एक है, बुजुर्गों की आबादी।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष की भारत इकाई 'यूएनएफपीए- इंडिया' की प्रमुख एंड्रिया वोजनार का कहना है कि 2050 तक भारत की बुजुर्ग आबादी दोगुनी हो सकती है। ऐसे में बुजुर्गों के लिए खास नीतियां बनाने की जरूरत है, ताकि उन्हें स्वास्थ्य सेवा, आवास और पेंशन मिल सके। इसकी जरूरत खासकर बुजुर्ग महिलाओं को रहेगी, जो बुढ़ापे में अकेली पड़ सकती हैं। उनके लिए गरीबी बड़ी समस्या रहेगी।

'यूएनएफपीए-इंडिया' की 'रेजिडेंट' प्रतिनिधि वोजनार ने विश्व जनसंख्या दिवस (11 जुलाई) के कुछ दिनों बाद समाचार एजेंसी पीटीआई से बातचीत में जनसंख्या के उन प्रमुख रुझानों को रेखांकित किया, जिन्हें भारत सतत विकास में तेजी लाने के लिए प्राथमिकता दे रहा है। इनमें युवा आबादी, वृद्ध जनसंख्या, शहरीकरण, प्रवासन और जलवायु के हिसाब से फेरबदल करना शामिल है। ये देश के सामने अनूठी चुनौतियां हैं, लेकिन इन्हें अवसर में भी बदला जा सकता है।

भारत में कितनी है बुजुर्ग आबाद

भारत में साल 2050 तक बुजुर्गों की आबादी दोगुनी होकर 34 करोड़ 60 लाख हो जाने का अनुमान है। अगर इनकी जरूरत के हिसाब से इंफ्रास्ट्रक्चर बनाने के लिए अभी से निवेश नहीं किया गया, तो आगे चलकर काफी मुश्किलें हो सकती हैं। खासकर, स्वास्थ्य सेवा, आवास और पेंशन योजनाओं में निवेश बढ़ाने की सख्त दरकार है।

यह चुनौती असल में अवसर भी पैदा कर सकती है। फिलहाल भारत में 10 से 19 वर्ष की आयु के लोगों की तादाद 25 करोड़ से अधिक है। अगर स्वास्थ्य, शिक्षा, नौकरी के लिए प्रशिक्षण और रोजगार सृजन में निवेश करे, तो इस जनसांख्यिकीय क्षमता को भुनाया जा सकता है। इससे देश को निरंतर तरक्की की राह पर आगे बढ़ने में भी मदद मिलेगी।

भारत में 2050 तक शहरी आबादी 50 प्रतिशत तक पहुंच सकती है। ऐसे में वायु प्रदूषण समेत दूसरी पर्यावरणीय समस्याएं भी गंभीर हो सकती हैं। इनसे निपटने के लिए भी स्मार्ट शहरों, मजबूत बुनियादी ढांचे और किफायती आवास का निर्माण महत्वपूर्ण है।

चीन में गंभीर है बुजुर्गों की समस्या

चीन में बुजुर्गों की बड़ी आबादी पहले ही गंभीर समस्या बन चुकी है। चीन की कम्युनिस्ट सरकार ने 1980 में आबादी कम करने के लिए सख्त जनसंख्या नियंत्रण कानून लगा किया था। इसके मुताबिक, चीन के अधिकांश परिवार एक ही बच्चा पैदा कर सकते हैं। इससे चीन की जनंसख्या तो नियंत्रित हो गई, लेकिन बुजुर्गों के अनुपात में उनकी जगह लेने के लिए युवा आबादी नहीं तैयार हो पाई।

पिछले साल चीन में एक विधवा महिला का वीडियो भी वायरल हुआ था। इसमें दिखाया गया था कि वह महिला 100 युआन यानी करीब 1,200 रुपये में गुजर-बसर के लिए किराना स्टोर से क्या-क्या सामान खरीद सकती हैं। यह उनकी मासिक पेंशन थी और आमदनी का इकलौता जरिया। चीन सरकार ने बदनामी से बचने और गरीबी छिपाने के लिए वह वीडियो से इंटरनेट से हटवा दिया।

78 साल की उस बुजुर्ग विधवा महिला ने बताया कि उसे पेंशन में करीब 12 सौ रुपये मिलते हैं। इनसे वह चावल खरीदना चाहती है, क्योंकि इतने कम पैसों में बस यही इकलौती चीज आ सकती है। महिला का कहना था कि उसने लंबे वक्त से गोश्त या कोई और अच्छा खाना नहीं खाया। बस किसी तरह अपना पेट पाल रही है।

क्रेडिट स्कोर का आपके लोन रेट कैसे पर पड़ता है असर? बैंक से ले रहे हैं कर्ज, तो जरूर बरतें ये सावधानी

आपको क्रेडिट कार्ड लेना हो या फिर घर-गाड़ी के लिए लाखों का लोन क्रेडिट स्कोर की जरूरत हमेशा पड़ेगी। अगर आपका क्रेडिट स्कोर अच्छा है तो आसान शर्तों पर कर्ज मिल जाएगा। ब्याज दर और लोन चुकाने की अवधि में भी कुछ रियायत मिल सकती है। अगर क्रेडिट स्कोर खराब है तो बैंक लोन देने से मना कर सकते हैं। कर्ज देंगे भी तो ब्याज दर अधिक हो सकती है।

नई दिल्ली। बिजनेस डेस्क, नई दिल्ली। आपको गाड़ी और खरीदने के लिए लोन की जरूरत है, लेकिन बैंक आपको कर्ज देगा या नहीं, ये काफी हद तक आपके क्रेडिट स्कोर पर निर्भर करता है। इसे आम बोलचाल में सिबिल स्कोर भी कहते हैं। यह तीन अंकों की संख्या होती है, 300 से 900 के बीच। यह संख्या आपके क्रेडिट का इतिहास होती है। मसलन, आपने पहले लोन लिया है या नहीं। अगर लिया है, तो उसे समय पर चुकाया है नहीं। यहां तक कि आपने सिर्फ लोन के लिए इंक्वायरी भी की होगी, तो उसका रिकॉर्ड भी इन नंबरों में कैद हो जाता है।

कैसे तय होता है क्रेडिट स्कोर

क्रेडिट स्कोर की गणना देश के प्रमुख क्रेडिट ब्यूरो करते हैं। RBI ने इसके लिए चार क्रेडिट इन्फॉर्मेशन कंपनियों को लाइसेंस दे रखा है- क्रेडिट इन्फॉर्मेशन ब्यूरो (इंडिया) लिमिटेड (CIBIL), CRIF हाईमार्क, एक्सपीरियन, और इक्विफैक्स। इनमें तो CIBIL इतनी मशहूर है कि लोग क्रेडिट स्कोर को सिबिल स्कोर ही कहने लगे हैं। ये कंपनियां आपके क्रेडिट स्कोर का मूल्यांकन करती हैं, जिससे आपकी फाइनेंशियल हेल्थ का पता चलता है।

क्रेडिट स्कोर की अहमियत

आपको क्रेडिट कार्ड लेना हो या फिर घर-गाड़ी के लिए लाखों का लोन, क्रेडिट स्कोर की जरूरत हमेशा पड़ती है। अगर आपका क्रेडिट स्कोर अच्छा है, तो आपको आसान शर्तों पर कर्ज मिल जाएगा। ब्याज दर और लोन चुकाने की अवधि में भी कुछ रियायत मिल सकती है। लेकिन, अगर क्रेडिट स्कोर खराब है, तो बैंक लोन देने से मना कर सकते हैं। कर्ज देंगे भी, तो कड़ी शर्तों और अधिक ब्याज दर के साथ।

क्यों कम होता है क्रेडिट स्कोर

क्रेडिट स्कोर कम होने की कई वजहें हो सकती हैं। जैसे कि लोन की किस्त चूकना, क्रेडिट कार्ड के भुगतान में देरी, पुराना क्रेडिट कार्ड बंद करना। अगर आप कम समय के अंतराल में क्रेडिट कार्ड या लोन के लिए कई बार पूछताछ करते हैं, तो भी आपका क्रेडिट स्कोर घट सकता है। क्रेडिट स्कोर बेहतर रखने के लिए क्रेडिट कार्ड का बिल और दूसरी EMI को समय पर भरना चाहिए।

पेपरलेस फॉर्मेट में पेश किया जाएगा बजट; दो भाषाओं में होगा उपलब्ध, ऐप से भी कर सकेंगे डाउनलोड

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 23 जुलाई को बजट पेश करने की सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। पिछले कुछ पूर्ण केंद्रीय बजटों की तरह Budget 2024 भी कागज रहित यानी पेपरलेस फॉर्मेट में पेश किया जाएगा। यह निर्मला सीतारमण का लगातार सातवां बजट होगा और वह इस मामले में पूर्व वित्त मंत्री मोरारजी देसाई का रिकॉर्ड तोड़ेंगी। मोरारजी ने लगातार 6 बजट पेश किए थे।

नई दिल्ली। बिजनेस डेस्क, नई दिल्ली। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण अपना सातवां केंद्रीय बजट पेश करने के लिए तैयार हैं। संसद का मानसून सत्र 22 जुलाई से शुरू होगा। इस दिन वित्त मंत्री इकोनॉमिक सर्वे को संसद के पटल पर रखेंगी और अगले दिन मोदी 3.0 का पहला बजट पेश करेंगी। इसी के साथ सीतारमण के नाम लगातार सात बजट पेश करने का रिकॉर्ड दर्ज हो जाएगा। अब तक यह रिकॉर्ड मोरारजी देसाई के नाम है। देसाई 1959 से 1964 तक देश के वित्त मंत्री रहे। उन्होंने देश के लिए रिकॉर्ड छह बजट पेश किए। इनमें से पांच पूर्ण बजट थे और एक अंतरिम बजट था।

पूरी हो चुकी हैं बजट की सभी तैयारियां

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट पेश करने की सभी तैयारियां पूरी कर ली हैं। वित्त मंत्रालय ने अर्थव्यवस्था के विभिन्न हितधारकों के साथ कई दौर का विचार-विमर्श किया है। ये बैठकें 20 जून को शुरू हुई थीं। इस दौरान सीतारमण ने ट्रेड यूनियनों से बात की। शिक्षा एवं स्वास्थ्य क्षेत्र, पूंजी बाजार, रोजगार एवं कौशल के साथ एमएसएमई सेक्टर के साथ भी उनका विचार-विमर्श हुआ।

वित्त मंत्री ने सरकारी नीतियों को बेहतर करने के लिए अर्थशास्त्रियों से भी मुलाकात की। अर्थशास्त्रियों के समूह ने सुझाव दिया कि आगामी बजट में राजकोषीय घाटे को कम करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। साथ ही, रोजगार पैदा करने की रफ्तार को भी तेज करने की जरूरत है। उन्होंने पूंजीगत व्यय को बढ़ाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। किसान संघों ने वित्त मंत्री से कृषि क्षेत्र के लिए बजटीय आवंटन बढ़ाने का आग्रह किया।

पेपरलेस फॉर्मेट में पेश होगा केंद्रीय बजट

पिछले कुछ पूर्ण केंद्रीय बजटों की तरह Budget 2024 भी कागज रहित यानी पेपरलेस फॉर्मेट में पेश किया जाएगा। पेपरलेस बजट पेश करने की शुरुआत साल 2021 में हुई थी। उस वक्त कोरोना महामारी चरम पर थी। ऐसे में आशंका जताई जा रही थी कि कागजों के जरिए कोरोना संक्रमण फैल सकता है। इसलिए सरकार ने पेपरलेस बजट पेश करने का फैसला किया।

कोरोना काल के बाद भी सरकार ने पेपरलेस बजट की परंपरा को ही बरकरार रखा। वित्त वर्ष 2022 और वित्त वर्ष 2023 का बजट भी पेपरलेस था। वित्त मंत्री टैबलेट के जरिए बजट पेश करती हैं और उसी से बजट के सभी महत्वपूर्ण बिंदु संसद में रखती हैं।

बजट से पहले सोमवार को कैसा रहेगा शेयर मार्केट का मिजाज, तेजी आएगी या होगी मुनाफावसूली?

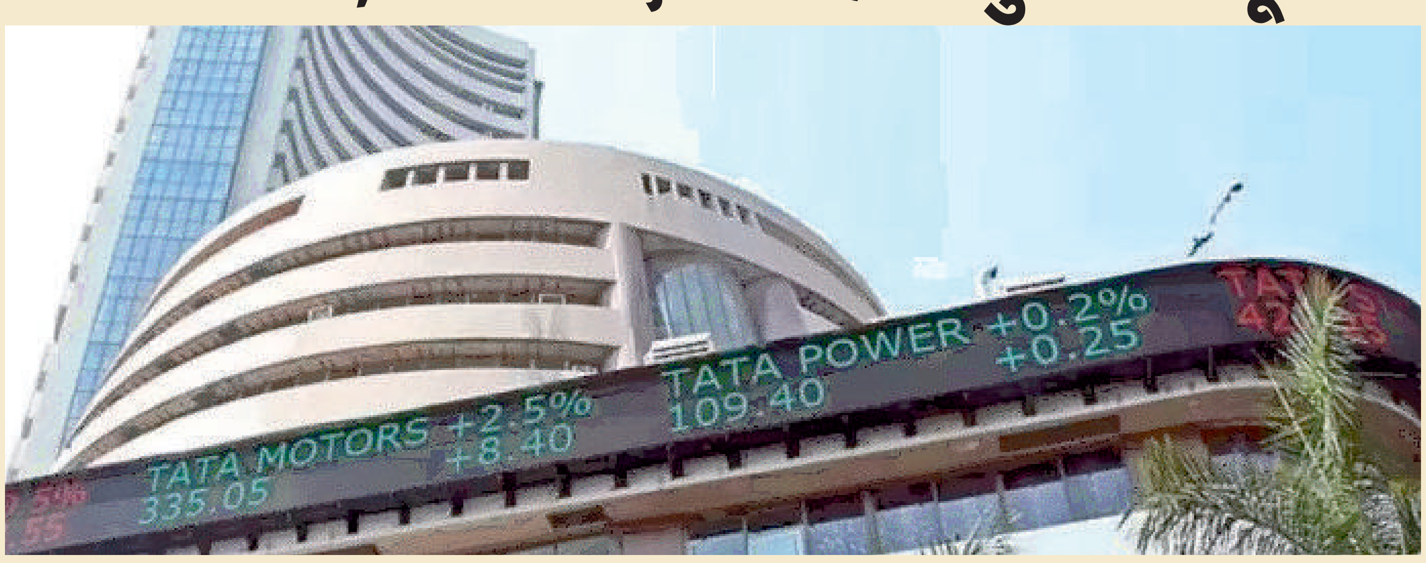

सोमवार को बाजार खुलने पर सभी की नजर एचडीएफसी बैंक के शेयर पर रहेगी। इसने शनिवार को अपने वित्तीय नतीजे जारी किए। बैंक का जून 2024 को समाप्त तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ 33.17 प्रतिशत बढ़कर 16474.85 करोड़ रुपये रहा है। रिजल्ट के बाद कोटक महिंद्रा बैंक और यस बैंक के शेयर भी फोकस में रहेंगे।

नई दिल्ली। पीटीआई, नई दिल्ली। पिछले हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन शेयर मार्केट में भारी मुनाफावसूली के चलते बड़ी गिरावट देखने को मिली। इस हफ्ते भी आम बजट और कंपनियों के तिमाही नतीजों के मद्देनजर उतार-चढ़ाव का सिलसिला बरकरार रहने का अनुमान है।

क्या है एक्सपर्ट की राय

स्वस्तिका इन्वेस्टमार्ट लिमिटेड के सीनियर टेक्निकल एनालिस्ट प्रवेश गौड़ ने कहा, 'आम बजट 23 जुलाई को पेश होगा। यह शेयर बाजार की दशा और दिशा तय करने में अहम भूमिका निभाएगा।' प्रवेश गौड़ का मानना है कि सरकार बजट में ग्रोथ को बढ़ावा देने वाली नीतियों पर फोकस जारी रखेगी। उन्होंने कहा कि मौजूदा वित्त वर्ष की पहली तिमाही नतीजों और वैश्विक रुख से भी शेयर मार्केट का मिजाज प्रभावित होगा।

जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज में रिसर्च हेड विनोद नायर का भी मानना है कि बाजार की दिशा आगामी बजट से तय होगी। वहीं, मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के रिटेल रिसर्च हेड सिद्धार्थ खेमका का भी कहना है कि तिमाही नतीजों का सत्र रफ्तार पकड़ने जा रह है, जिससे बाजार में कुछ शेयर विशेष गतिविधियां देखने को मिल सकती हैं।

किन शेयरों पर रहेगी नजर

सोमवार को बाजार खुलने पर सभी की नजर एचडीएफसी बैंक के शेयर पर रहेगी। इसने शनिवार को अपने वित्तीय नतीजे जारी किए। बैंक का जून, 2024 को समाप्त तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ 33.17 प्रतिशत बढ़कर 16,474.85 करोड़ रुपये रहा है। रिजल्ट के बाद कोटक महिंद्रा बैंक और यस बैंक के शेयर भी फोकस में रहेंगे।

इस सप्ताह भी कई बड़ी कंपनियां अपने तिमाही नतीजे जारी करने वाली हैं। इनमें बजाज फाइनेंस, हिंदुस्तान यूनिलीवर, एक्सिस बैंक, बजाज फिनसर्व, लार्सन एंड टुब्रो, डीएलएफ, टेक महिंद्रा और नेस्ले शामिल हैं। इन कंपनियों के वित्तीय नतीजों से भी शेयर मार्केट में हलचल बढ़ सकती है।

बीते हफ्ते मार्केट का हाल

पिछले हफ्ते आखिरी कारोबार सत्र को छोड़ दें, तो बाजार का ओवरऑल प्रदर्शन अच्छा रहा। बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 0.10 प्रतिशत चढ़ गया। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी में 0.11 प्रतिशत का उछाल दिखा। सेंसेक्स और निफ्टी ने शुक्रवार को अपना नया ऑलटाइम हाई बनाया। लेकिन, आखिर में मुनाफावसूली के चलते ये गिरावट के साथ बंद हुए।

गारमेंट एक्सपोर्ट में बांग्लादेश और वियतनाम से पिछड़ रहे भारतीय निर्यातक? GTRI ने जताई चिंता

जीटीआरआई का कहना है कि बांग्लादेश और वियतनाम के विपरीत भारतीय निर्यातकों को रोजाना संघर्ष करना पड़ता है। कपड़ों पर उच्च आयात शुल्क डीजीएफटी और सीमा शुल्क की जटिल प्रक्रियाओं की वजह से निर्यातकों को हर इंच आयातित कपड़े के लिए हिसाब लगाना पड़ता है और संघर्ष करना पड़ता है। बांग्लादेश और वियतनाम में निर्यातकों को आसानी से गुणवत्ता वाले आयातित कपड़े मिल जाते हैं।

नई दिल्ली। पीटीआई, नई दिल्ली। विदेश व्यापार महानिदेशालय (डीजीएफटी) और सीमा शुल्क की जटिल प्रक्रियाओं, आयात अंकुश और घरेलू निहित स्वार्थ जैसे मुद्दों के कारण गारमेंट निर्यात की वृद्धि प्रभावित हो रही है। आर्थिक थिंक टैंक ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने यह बात कही है। जीटीआरआई का कहना है कि निर्यातकों की प्रमुख समस्या गुणवत्ता वाला कच्चा माल, खासतौर पर सिंथेटिक कपड़े हासिल करना है।

भारतीय निर्यातकों का कड़ा संघर्ष

जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा कि बांग्लादेश और वियतनाम के विपरीत भारतीय निर्यातकों को रोजाना संघर्ष करना पड़ता है। कपड़ों पर उच्च आयात शुल्क, डीजीएफटी और सीमा शुल्क की जटिल प्रक्रियाओं की वजह से निर्यातकों को हर इंच आयातित कपड़े के लिए हिसाब लगाना पड़ता है और संघर्ष करना पड़ता है। बांग्लादेश और वियतनाम में निर्यातकों को आसानी से गुणवत्ता वाले आयातित कपड़े मिल जाते हैं।

ऊंची कीमतों पर खरीद के लिए मजबूर

श्रीवास्तव ने कहा कि पालिस्टर और विस्कोस स्टेपल फाइबर जैसे कच्चे माल पर अनिवार्य गुणवत्ता मानदंड लागू करने से आयात जटिल हो रहा है। इसका कारण यह है कि भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) धीमी गति से विदेशी आपूर्तिकर्ताओं को पंजीकृत करता है। यह देरी निर्यातकों को घरेलू बाजार में एकाधिकार रखने वालों से ऊंची कीमतों पर खरीद के लिए मजबूर करती है।

जीटीआरआई की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि डीजीएफटी और सीमा शुल्क की प्रक्रियाएं पुरानी हैं। यह जटिल प्रक्रिया निर्यातकों को हतोत्साहित करती है। इसलिए इसमें व्यापक बदलाव की तत्काल जरूरत है। जीटीआरआई का मानना है कि कपड़ा क्षेत्र के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना में भी बदलाव लाने की जरूरत है।

शिक्षण में कार्टून का महत्व : विजय गर्ग

कार्टून हमारे आस-पास दिखाई देने वाली चीजों का एक मनोरंजक तरीके से किया गया एक सरल चित्रण है जिसमें बहुत सारे जीवंत रंग होते हैं या कार्टून एक फिल्म, फिल्म या एक छोटा वीडियो होता है जिसमें एनीमेशन होता है। कार्टून मुख्यतः बच्चों के लिए हैं। वे आम तौर पर समाचार पत्रों, कॉमिक पुस्तकों और पत्रिकाओं में मुद्रित होते हैं या उन्हें टेलीविजन पर प्रसारित किया जाता है। कार्टून पहले केवल मनोरंजन के उद्देश्य से बनाये जाते थे। लेकिन आजकल के कार्टूनों का उपयोग अन्य उद्देश्यों के लिए भी बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। कार्टून का उपयोग अब मौज-मस्ती और मनोरंजन के अलावा शिक्षा और लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए भी किया जा रहा है। अध्यापन एक बहुत कठिन पेशा है। आपके अपने दिमाग से सारी जानकारी किसी और के दिमाग में स्थानांतरित करने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ता है। इस कारण से, शिक्षण के लिए कई नई रणनीतियों, प्रौद्योगिकियों और विचारों की आवश्यकता होती है जो इस कार्य को आसान बना सकते हैं। बहुत लंबे समय से शिक्षण सहायता के रूप में कार्टून का बहुतायत से उपयोग किया जाता रहा है। उन्होंने छात्रों के लिए सीखना आसान और बेहतर अनुभव बना दिया है। कार्टूनों ने विद्यार्थियों के लिए साधारण विषयों को आकर्षक बना दिया है। कार्टून किताबों के नीरस पन्नों और विषय में छिपे रहस्यों को जीवंत कर देते हैं। कार्टून बहुत ही आकर्षक होते हैं. यदि आप एक पृष्ठ खोलते हैं जिस पर कोई कार्टून बना हुआ है, तो पहली चीज़ जो आप पृष्ठ पर देखेंगे वह उस पर बना कार्टून होगा और पाठ को पढ़े बिना भी आप कार्टून छवि को समझने का प्रयास करेंगे। किसी पृष्ठ के एक-चौथाई या छठे भाग पर बनाया गया एक कार्टून पाठ से भरे पृष्ठ की जगह ले सकता है। छोटे बच्चों या प्री-नर्सरी और नर्सरी के छात्रों के लिए किताबें कार्टून छवियों से भरी होती हैं क्योंकि वे बच्चों की आंखों को बहुत पसंद आती हैं। बच्चों द्वारा देखे गए कार्टून चित्र उनके मन पर प्रभाव छोड़ते हैं। वे यह याद रखते हैं कि कार्टून के रूप में क्या देखा गया था, या कार्टून द्वारा क्या कार्य किए गए थे या कुछ और। अगर सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो कार्टून बहुत अच्छे हो सकते हैं। पारंपरिक शिक्षण पद्धति में, छात्रों को व्यवस्थित बातचीत या चर्चा के माध्यम से ज्ञान प्रदान किया जाता था। लेकिन आने वाली पीढ़ी थोड़ी अलग है. बच्चों की नई पीढ़ी लगभग हर चीज़ की बारीकी से जांच करना चाहती है। बच्चों के मन में बहुत सारे प्रश्न आने के कारण, शिक्षण की पारंपरिक योजना फ्लॉप हो गई है। यह शिक्षण के लिए नई तकनीकों की आवश्यकता को प्रस्तुत करता है। कभी-कभी, यह कार्टून या कॉमिक स्ट्रिप्स के उपयोग के माध्यम से हासिल किया जाता है। बच्चों को शिक्षित करने के लिए कार्टून बहुत फायदेमंद साबित हुए हैं। वे शुरू से ही नैतिक मूल्यों का संदेश देते रहे हैं।

शिक्षा में कार्टून का महत्व ? कार्टून ध्यान खींचते हैं: बच्चे हमेशा हर पल का आनंद लेना चाहते हैं। वे अपने आस-पास हर समय मनोरंजन और हास्य का अनुभव करना चाहते हैं। और कार्टून को मनोरंजन और हास्य के साथ जोड़ना मानव स्वभाव है। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि मनोरंजन की तलाश में उनके आसपास की पहली इकाई जो छात्रों का ध्यान आकर्षित करेगी, वह कार्टून या कॉमिक स्ट्रिप्स होगी। सिर्फ बच्चे ही नहीं बल्कि बड़े भी ऐसा ही करते हैं. जब भी हम कोई किताब खोलते हैं तो सबसे पहले उस पर छपे चित्रों को देखते हैं और फिर पाठ को। इसी तरह, छात्र पहले कॉमिक स्ट्रिप पढ़ेंगे और फिर पाठ। इसलिए किसी विषय की ओर छात्र का ध्यान आकर्षित करने के लिए कार्टून का उपयोग एक अच्छा विचार होगा।

कार्टून बेहतर समझ की ओर ले जाते हैं: ऐसे कई विषय हैं जिन्हें सैद्धांतिक रूप से नहीं समझा जा सकता है। उन्हें व्यावहारिक अनुभव या वास्तविक जीवन के उदाहरणों की आवश्यकता है। कॉमिक स्ट्रिप्स कर सकते हैंइस स्थिति में बहुत मदद करें. किसी कहानी को बताने के लिए कॉमिक स्ट्रिप का उपयोग आसानी से किया जा सकता है। कार्टून चरित्रों और कॉलआउट के उपयोग से आसानी से एक कहानी बनाई जा सकती है और छात्र बोझिल विषयों को बहुत आराम से समझ सकेंगे। कई लेखक पहले से ही कार्टून की इस अवधारणा का उपयोग कर रहे हैं। कई इतिहास और अर्थशास्त्र के पुस्तक लेखक अतीत में घटी किसी महत्वपूर्ण घटना या किसी सिद्धांत या अवधारणा को प्रस्तुत करने के लिए कार्टून या कॉमिक स्ट्रिप्स का उपयोग करते हैं जो सैद्धांतिक समझ से परे है। केवल एक उदाहरण लिखने के बजाय यह बहुत अच्छा होगा यदि इसे एक कॉमिक स्ट्रिप के रूप में व्यक्त किया जाए जिससे छात्र की एकाग्रता बढ़ेगी और बेहतर समझ पैदा होगी।

कार्टून सार्वजनिक भाषण विकसित कर सकते हैं: एक कार्टून कॉमिक स्ट्रिप में अलग-अलग व्यक्तिगत संवादों के साथ बहुत सारे पात्र होते हैं। एक शिक्षक छात्रों को प्रत्येक पात्र सौंप सकता है और उन्हें कॉमिक स्ट्रिप पर एक नाटक प्रस्तुत करने के लिए कह सकता है। इससे विद्यार्थी का आत्मविश्वास बढ़ेगा। छात्रों को पूरी कक्षा के सामने बोलने या प्रदर्शन करने का मौका मिलेगा। इससे उनकी बोलने की क्षमता बढ़ेगी. यह बाकी छात्रों के लिए भी फायदेमंद है क्योंकि उन्हें कहानी बेहतर तरीके से समझ आएगी। यह सभी के लिए एक मजेदार सत्र की तरह होगा।'

नैतिक शिक्षा सिखाने के लिए कार्टून एक प्रभावी तरीका है: कभी-कभी शिक्षकों के लिए नैतिक मूल्यों और अच्छे शिष्टाचार को सिखाना मुश्किल हो जाता है। छात्र इन्हें हल्के में ले सकते हैं। यदि वे अच्छा व्यवहार नहीं करते हैं तो वे परिणामों को नहीं समझ सकते हैं। यह उन्हें नाटकीय ढंग से सिखाया जा सकता है। कार्टून वीडियो या फिल्म दिखाकर छात्र सीख सकते हैं कि विभिन्न परिस्थितियों को कैसे संभालना है, या यदि वे उचित आचरण का पालन नहीं करते हैं तो उन्हें किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इनके अलावा कई छोटी-छोटी बातें जैसे दोस्ती कैसे निभाएं, सही और गलत के बीच अंतर करना, दूसरों के सामने कैसे व्यवहार करना है, अपने सपनों को कैसे पूरा करना है और भी बहुत सी चीजें कार्टून देखकर या कॉमिक स्ट्रिप्स पढ़कर सीखी जा सकती हैं।

प्री-स्कूलिंग के लिए कार्टून एक बेहतरीन उपकरण हैं: कार्टून छोटे बच्चों का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। उन्हें कार्टून का उपयोग करके नर्सरी कविताएँ, वर्णमाला क्रम या गिनती श्रृंखला सिखाई जा सकती है। यह उन्हें कहानियाँ सिखाने का भी एक प्रभावी तरीका होगा। शारीरिक व्यायाम भी इस प्रकार सिखाया जा सकता है। बच्चों को शारीरिक व्यायाम पर एक कार्टून वीडियो दिखाया जा सकता है और उनसे वही अभ्यास करने के लिए कहा जा सकता है जो वीडियो में पात्र कर रहे हैं।

कार्टून बना सकते हैं बच्चों को कलाकार: कार्टून बच्चों में कलात्मक सोच विकसित कर सकते हैं। यदि आप किसी छात्र को अपनी कल्पना से कोई कार्टून चरित्र बनाने के लिए कहें तो वे ऐसी अद्भुत रचना दिखाएंगे कि आप आश्चर्यचकित रह जाएंगे। स्वयं कॉमिक स्ट्रिप लिखने से छात्रों की सोच कौशल और लेखन कौशल में वृद्धि होगी। इससे उनके मस्तिष्क के विकास में भी मदद मिलेगी क्योंकि उन्हें यह सोचना होगा कि अपनी कहानी से संवाद कैसे बनाएं और किस तरह का कार्टून उनके चरित्र के अनुरूप होगा। उनके दिमाग और हाथों के बीच यह समन्वय उनके मस्तिष्क का विकास करेगा।

सोचने की क्षमता बढ़ाएंगे कार्टून: मुद्रित कार्टून सिर्फ कॉमिक स्ट्रिप्स के रूप में नहीं होते हैं। कुछ साधारण कार्टून चित्र भी हैं जिन पर कोई पाठ मुद्रित नहीं है। कार्टून क्या कह रहा है इसकी व्याख्या करने के लिए उन्हें आलोचनात्मक सोच के स्तर की आवश्यकता होती है। कई संभावित परिणाम हो सकते हैं लेकिन सही परिणाम चुनने के लिए उच्च स्तरीय सोच कौशल की आवश्यकता होती है।

कार्टून शब्दावली में सुधार कर सकते हैं: कार्टून फिल्में देखते समय बच्चे कई नए शब्द सीख सकते हैं। वे सीख सकते हैंउनके अर्थ और वाक्यों में उनका उपयोग कैसे करें। वे यह भी सीखने में सक्षम हो सकते हैं कि आवाज के स्वर या हावभाव पूरे वाक्यों के अर्थ को कैसे बदल सकते हैं। वे यह भी सीख सकते हैं कि किस अवसर पर किन शब्दों का प्रयोग करना है।

कार्टून सुधार सकते हैं छात्र-शिक्षक संबंध: कार्टून सभी बच्चों को पसंद होते हैं। यदि शिक्षक छात्रों को पढ़ाने के लिए कार्टून का उपयोग करेगा तो छात्र शिक्षक को पसंद करने लगेंगे। जब शिक्षक छात्रों को किसी सिद्धांत या विषय को समझने के लिए कार्टून देखने या कॉमिक्स पढ़ने की पेशकश करेगा तो छात्रों में शिक्षक के प्रति रुचि विकसित होगी। एक बार यह संबंध विकसित हो जाने पर छात्र शिक्षक के प्रति अधिक ध्यान देंगे और शिक्षक द्वारा कहे गए हर शब्द को सुनेंगे। विद्यार्थी-शिक्षक संबंध प्रगाढ़ होंगे।

कार्टून शिक्षण के लिए एक सस्ता उपकरण है: प्रोजेक्टर, कंप्यूटर और अन्य प्रकार की स्मार्ट तकनीक जैसे अन्य उपकरणों की तुलना में कार्टून बहुत सस्ते हैं। कॉमिक स्ट्रिप के मामले में उन्हें बस कागज की एक शीट पर मुद्रित करने की आवश्यकता होती है या यदि यह एक एनीमेशन वीडियो या फिल्म है तो बस टेलीविजन स्क्रीन पर प्रदर्शित करने की आवश्यकता होती है। कार्टून बहुत आसानी से उपलब्ध हैं. इसे इंटरनेट से डाउनलोड किया जा सकता है, अखबारों या पत्रिकाओं से कॉमिक स्ट्रिप्स काटी जा सकती हैं। कई टेलीविजन चैनल हैं जो हर समय कार्टून फिल्में दिखाते हैं। इस तरह, वे दूसरों की तुलना में बहुत सस्ते उपकरण बन जाते हैं। निष्कर्ष हर माता-पिता सोचते हैं कि बहुत अधिक कार्टून देखने से उनके बच्चे के स्वास्थ्य पर असर पड़ सकता है। इसका असर उसकी आँखों या उसके मस्तिष्क के विकास पर पड़ सकता है। यह दृष्टि केवल पचास प्रतिशत ही सही है। अधिक मात्रा में कार्टून देखने से निश्चित रूप से बच्चे के स्वास्थ्य पर असर पड़ेगा लेकिन कार्टून पर सही समय बिताया गया समय बच्चे के विकास और शिक्षा में मदद करेगा। ऐसा भी माना जाता है कि अगर बच्चा कार्टून देखेगा तो वह कार्टून की तरह व्यवहार करने लगेगा। ये हमेशा सही नहीं होता. पूरे दिन एक ही कार्टून देखने से वह वैसा बन सकता है लेकिन आधे या एक घंटे तक देखने से उस पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा। यह इस पर भी निर्भर करता है कि बच्चा किस प्रकार का कार्टून देख रहा है। यदि कार्टून चरित्र अपनी भूमिका में सकारात्मक व्यवहार करेगा तो इसका बच्चे पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। कार्टून भी एक अच्छा शिक्षण उपकरण बन सकते हैं। इस सस्ते उपकरण के बहुत सारे फायदे हैं। यह न केवल छात्र का ध्यान आकर्षित कर सकता है बल्कि उसे कई चीजें भी सिखा सकता है। प्री-स्कूलिंग से लेकर मिडिल स्कूलिंग तक कार्टून बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। तनावपूर्ण और नीरस माहौल बनाने के बजाय, कार्टून एक आरामदायक और आनंददायक माहौल बनाते हैं।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट

शिवलिंग व जल अर्पण

शास्त्रों में कहा गया है कि शिव कृपा पाने के लिए पूरे नियम से शिवलिंग पर जल अर्पित करना चाहिए क्योंकि जल धारा भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है और नियम से इसे शिवलिंग पर चढ़ाने से भक्तों की सारी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

किस दिशा की ओर चढ़ाएं जल-:

* शिवलिंग पर जल उत्तर दिशा की ओर मुंह करके जल चढ़ाएं क्योंकि उत्तर दिशा को शिव जी का बायां अंग माना जाता है जो माता पार्वती को समर्पित है। इस दिशा की ओर मुंह करके जल अर्पित करने से भगवान शिव और माता पार्वती दोनों की कृपा दृष्टि प्राप्त होती है।

कौन से पात्र से अर्पित करें जल-:

* शिवलिंग पर जल अर्पित करते समय सबसे ज्यादा ध्यान में रखने वाली बात ये है कि आप किस पात्र से जल अर्पित करें। जल चढ़ाने के लिए सबसे अच्छे पात्र तांबे, चांदी और कांसे के माने जाते हैं। स्टील के पात्र से शिवलिंग पर जल नहीं चढ़ाना चाहिए। जल अर्पण के लिए सर्वोत्तम पात्र तांबे का है। इसलिए इसी पात्र से जल चढ़ाना उत्तम है। लेकिन तांबे के पात्र से शिव जी को दूध न चढ़ाएं क्योंकि तांबे में दूध विष के समान बन जाता है।

कभी भी शिवलिंग पर तेजी से जल नहीं चढ़ाना चाहिए-:

* शास्त्रों में भी बताया गया है कि शिव जी को जल धारा अत्यंत प्रिय है। इसलिए जल चढ़ाते समय ध्यान रखें कि जल के पात्र से धार बनाते हुए धीरे से जल अर्पित करें। पतली जल धार शिवलिंग पर चढाना ज्यादा उचित रहता है।

बैठकर चढ़ाएं जल-:

* हमेशा शिवलिंग पर जल अर्पित करते समय ध्यान रखें कि बैठकर ही जल अर्पित करें। यहां तक कि रुद्राभिषेक करते समय भी खड़े नहीं होना चाहिए। खड़े होकर जल चढ़ाने पर शिवजी के ऊपर जल गिरने के बाद हमारे पैरों में उसके छींटें लगते हैं जो सही नहीं है।

जल के साथ कुछ और न मिलाएं-:

* कभी भी शिवलिंग पर जल चढ़ाते हुए जल के पात्र में कोई अन्य सामग्री न मिलाएं। कोई भी सामग्री जैसे पुष्प, अक्षत या रोली जल में मिलाने से उनकी पवित्रता ख़त्म हो जाती है। इसलिए भगवान शिव की कृपा दृष्टि पाने के लिए हमेशा जल को अकेले ही चढ़ाना चाहिए। लेकिन जल में कुछ बूंदे नमर्दा या गंगा आदि पवित्र नदियों की जरूर मिलानी चाहिए।

वस्तु अर्पित करने के बाद जल चढ़ाएं-:

* आप यदि भगवान शिव को शहद, दूध, दही या किसी प्रकार का रस अर्पित करते हैं तो वह जल में ना मिलाएं। कोई भी वस्तु भगवान को अलग से चढ़ाएं फिर उसके बाद में जल अर्पित करें।

देसी गाय का दूध ही काम लें-:

* शिवलिंग पर केवल शुद्ध देसी भारतीय गाय का कच्चा दूध ही चढ़ाना चाहिए, अन्य प्रकार का दूध बिल्कुल भी ना चढ़ाएं।

22 जुलाई, सोमवार से बाबा भोलेनाथ का प्रिय सावन का महीना प्रारंभ हो जाएगा, अतः आप इस पवित्र महीने में पूर्ण समर्पित भाव से भोलेनाथ की पूजा-उपासना करके आनंद प्राप्त करें।

भाजपा को संविधान पसंद नहीं है. वे संविधान निर्माण में शामिल नहीं थे- कांग्रेस नेता सोनाली साहू

मनोरंजन सासमल , स्टेटे हेड उडीशा

भुबनेस्वर : कांग्रेस प्रवक्ता सोनाली साहू ने बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा पर जमकर निशाना साधा. संविधान को लेकर जेपी नड्डा के बयान पर टिप्पणी करते हुए कांग्रेस प्रवक्ता सोनाली साहू ने कहा कि बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने जो कहा उससे उनकी छोटी मानसिकता का पता चलता है कि उन्हें ओडिशा के लोगों से कोई प्यार नहीं है. संविधान को संविधान का हत्यारा कहना लंका में हरि नाम के समान है। उन्होंने 240 में 400 पार का नारा लगाते हुए कहा कि भारत की जनता संविधान को समझती है. मणिपुर में संविधान की बात करने वाले लोग कहां गए? क्या किसानों ने विरोध किया और मर गए? सोनाली ने पूछा कि कहां गए संविधान के रक्षक?

ओडिशा में राज्यपाल के बेटे ने ओडिशा के एक अधिकारी पर हमला कर उसे घायल कर दिया. कहां गए संविधान रक्षक जेपी नड्डा? एक श्लोक क्यों नहीं कहते? संविधान भाजपा के चेहरे पर अलंकरण है। भाजपा के खिलाफ बोलने या लिखने वालों को जेल भेज दिया गया। तो कहाँ गए संविधान के रक्षक? अर्बन नक्सल ने भाजपाइयों को सजा दिया है। और वे चट्टी पीटीआई के संविधान पर राय ले रहे हैं. सुप्रीम कोर्ट ने चुनावी बॉन्ड को पारदर्शी बताया. इस सरकार ने मीडिया की आजादी छीन ली है. मीडिया या बीजेपी के खिलाफ गए लोगों की दुर्दशा सबने देखी है. संविधान को समझने वाला व्यक्ति कभी भी कांग्रेस मुक्त या विपक्षी दल मुक्त का नारा नहीं लगाएगा।

गुरू के बिना ज्ञान की रोशनी भी अधूरी : वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान

आगरा। गुरु पूर्णिमा, गुरु शिष्य की परम्परा का ये महान पर्व 21 जुलाई को हर्षोल्लास के साथ पुरे देश में मनाया जाता हैं, इस दिन शिष्य अपने गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और उनके ज्ञान और मार्गदर्शन के लिए उनका सम्मान करते हैं। गुरु पूर्णिमा भारत में अपने आध्यात्मिक गुरु के साथ-साथ अकादमिक गुरुओं के सम्मान में उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए मनाया जाने वाला पर्व है।

आज गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी मुशरफ खान ने सभी आध्यात्मिक शिक्षको, प्राध्यापक और पूरे प्रदेश व देशवासियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि सच्चे अर्थों में हमारे माता-पिता के बाद हमारे जीवन का नया पदार्पण होता है, तो संस्कारित और शिक्षित रूप से जो जीवन का बदलाव आता है। गुरू ही सदमार्ग पर चलने का रास्ता दिखाते हैं। वे ही हमारे जीवन के मार्गदर्शक है। सही क्या है, गलत क्या है। झूठ क्या है और सच क्या है, हमें समझाते हैं। गुरू असमंजस और हिचकिचाहट में हमारी राहों को सरल बनाते हैं। हमें अपने जीवन में गुरू के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है, साथ ही जीवन में सम्मान भी प्राप्त नहीं होता है। गुरू के बिना ज्ञान की रोशनी भी अधूरी है। उन्होंने कहा गुरु, एक ऐसा शब्द है जो ज्ञान, प्रेरणा और मार्गदर्शन का प्रतिबिंब है। गुरु वे होते हैं जो अंधकार में प्रकाश लाते हैं, अज्ञानता को दूर करते हैं और हमें जीवन का सही मार्ग दिखाते हैं। हर इंसान के जीवन में कोई न कोई गुरु होता है, खास बात ये है कि जो किसी को गुरु नहीं मानता है वो भी किसी न किसी से अपने जीवन में सीखता है। हम सब के जीवन में कोई न कोई हमारा आदर्श होता है। वे भी हमारे गुरु के समान होते हैं। गुरु पूर्णिमा के दिन अपने गुरु के प्रति सम्मान व्यक्त करना चाहिए। ऐसा करने से न सिर्फ गुरु और शिष्य के बीच का संबंध अच्छा होता है बल्कि दोनों को एक दूसरे के प्रति सम्मान और बढ़ जाता है। श्री खान ने आगे कहा कि गुरु किसी भी समाज व राष्ट्र के विकास के प्रमुख वाहक होते हैं। वर्षों के तप, शोध व अनुभव से प्राप्त ज्ञान से वे शिष्यों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने और उनमें चरित्र निर्माण व राष्ट्रप्रेम के बीज बोने का काम करते हैं। गुरु कृपा शिष्य की सभी प्रकार के विघ्नों से रक्षा करती है। शरणागत शिष्य के दैहिक, दैविक, भौतिक कष्टों को दूर कर उसे सद्गति प्रदान करती है। सभी गुरुजनों का सादर अभिनंदन एवं उन्हें नमन! हालांकि वर्तमान में हुए कई मामलों में गुरु और शिष्य दोनों अपने फर्ज निभाने में असफल साबित हो रहे हैं। उन्होंने गुरु और शिष्य की परंपरा को कायम रखने के लिए गुरु को त्यागी और शिष्य को समर्पण की भावना होनी चाहिए। इसी विचार के साथ एक बार पुनः गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर सभी गुरुजनों को नमन करता हूं और समस्त देशवासियों को गुरु पूर्णिमा की शुभकामनाएं देता हूं।

हर इंसान के जीवन में कोई न कोई गुरु होता हैं : वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा। गुरु पूर्णिमा हिंदू धर्म में सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है। इस दिन दिन, शिष्य अपने गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और उनके ज्ञान और मार्गदर्शन के लिए उनका सम्मान करते हैं। गुरु पूर्णिमा भारत में अपने आध्यात्मिक गुरु के साथ-साथ अकादमिक गुरुओं के सम्मान में उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए मनाया जाने वाला पर्व है। गुरु शिष्य की परम्परा का ये महान पर्व 21 जुलाई को हर्षोल्लास के साथ पुरे देश में मनाया जाता हैं। इस दिन ग़रीब जरुरतमंदों में दान-पुण्य का विशेष महत्व होता है।

आज गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी राजेश खुराना ने सभी आध्यात्मिक संतो, शिक्षको, प्राध्यापक और पूरे प्रदेश व देशवासियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा गुरु साक्षात परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः अर्थात गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है और गुरु ही भगवान शंकर है। गुरु ही साक्षात परब्रह्म है। ऐसे गुरु को मैं प्रणाम करता हूं। सच्चे अर्थों में हमारे माता-पिता के बाद हमारे जीवन का नया पदार्पण होता है, तो संस्कारित और शिक्षित रूप से जो जीवन का बदलाव आता है। गुरू ही सदमार्ग पर चलने का रास्ता दिखाते हैं। वे ही हमारे जीवन के मार्गदर्शक है। सही क्या है, गलत क्या है। झूठ क्या है और सच क्या है, हमें समझाते हैं। गुरू असमंजस और हिचकिचाहट में हमारी राहों को सरल बनाते हैं। हमें अपने जीवन में गुरू के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है, साथ ही जीवन में सम्मान भी प्राप्त नहीं होता है। गुरू के बिना ज्ञान की रोशनी भी अधूरी है। गुरु किसी भी समाज व राष्ट्र के विकास के प्रमुख वाहक होते हैं। वर्षों के तप, शोध व अनुभव से प्राप्त ज्ञान से वे शिष्यों को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने और उनमें चरित्र निर्माण व राष्ट्रप्रेम के बीज बोने का काम करते हैं। गुरु कृपा शिष्य की सभी प्रकार के विघ्नों से रक्षा करती है। शरणागत शिष्य के दैहिक, दैविक, भौतिक कष्टों को दूर कर उसे सद्गति प्रदान करती है। सभी गुरुजनों का सादर अभिनंदन एवं उन्हें नमन!

श्री खुराना ने आगे कहा कि गुरु, एक ऐसा शब्द है जो ज्ञान, प्रेरणा और मार्गदर्शन का प्रतिबिंब है। गुरु वे होते हैं जो अंधकार में प्रकाश लाते हैं, अज्ञानता को दूर करते हैं और हमें जीवन का सही मार्ग दिखाते हैं। हर इंसान के जीवन में कोई न कोई गुरु होता है, खास बात ये है कि जो किसी को गुरु नहीं मानता है वो भी किसी न किसी से अपने जीवन में सीखता है। हम सब के जीवन में कोई न कोई हमारा आदर्श होता है। वे भी हमारे गुरु के समान होते हैं। गुरु पूर्णिमा के दिन अपने गुरु के प्रति सम्मान व्यक्त करना चाहिए। ऐसा करने से न सिर्फ गुरु और शिष्य के बीच का संबंध अच्छा होता है बल्कि दोनों को एक दूसरे के प्रति सम्मान और बढ़ जाता है।

उन्होंने कहा, शास्त्रों में गुरु का दर्जा भगवान के समान बताया गया है। गुरु के बिना ज्ञान मिल ही नहीं सकता। अनंत काल से गुरु को लोग भगवान मानते आ रहे है। गुरु मिलते ही उनके चरण स्पर्श करना चाहिए। आदिकाल से गुरु परंपरा हमारी सभ्यता से चली आ रही है। हमारी संस्कृति, शिक्षा और जीवन शैली के बलबूते पर भारत दुनिया का सदैव नेतृत्व करता रहा है। ऐसा माना जाता है कि अपने गुरुकुल की स्थापना के बलबूते पर मानव संस्कृति के लिए जानी जाती है। इसलिए नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशीला, उज्जैन का सांदीपनि आश्रम यह वह गुरुकुल है, जिन्होंने अपनी मौजूदगी में एक नया इतिहास रचा और भारत में एक अलग पहचान बनाई। दुनिया के तमाम युवा इन गुरुकुलों में शिक्षा लेने के लिए भारत आया करते थे। उस परंपरा की पुनर्स्थापना हो। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी के नेतृत्व में जिस प्रकार से भारतीय संस्कृति का परचम लहरा रहा है। सभी चीजों में बदलाव आया है। मैं उम्मीद करता हूं कि गुरुकुल की व्यवस्था पुनर्स्थापित हो क्योंकि भगवान को भी बताने वाला गुरु ही है। गुरु ही शिष्यों को मार्गदर्शन करते है। हालांकि वर्तमान में हुए कई मामलों में गुरु और शिष्य दोनों अपने फर्ज निभाने में असफल साबित हो रहे हैं। उन्होंने गुरु और शिष्य की परंपरा को कायम रखने के लिए गुरु को त्यागी और शिष्य को समर्पण की भावना होनी चाहिए। इसी विचार के साथ एक बार पुनः गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर सभी गुरुजनों को नमन करता हूं और समस्त देशवासियों को गुरु पूर्णिमा की शुभकामनाएं देता हूं। देश व प्रदेश वासियों को गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं!

मंदिरों के आसपास मीट की दुकानों का संचालन बन्द होना चाहिए : समाजसेवी पंकज जैन

मीट की दुकानों का संचालन सार्वजनिक स्थानो के बजाय एक निर्धारित स्थान पर होना चाहिए : समाजसेवी पंकज जैन

आगरा। सावन का महीना बेहद खास माना जाता है। सावन का महीना सोमवार 22 जुलाई से शुरू होने वाला है और इसका समापन 19 अगस्त रक्षाबंधन के दिन होगा। इस बार सावन 29 दिनों के रहेंगे, जिसमें 5 सावन के सोमवार पड़ेंगे। इस माह में लोग सभी 12 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करते हैं। कांवड़ यात्रा शुरू होती है। पवित्र नदियों का जल लाकर शिवालयों में शिवलिंग का अभिषेक करते हैं। इस अवसर पर समाजसेवी पंकज जैन ने कहा कि सावन माह भगवान शंकर का पवित्र माह माना जाता है। सावन के पवित्र महीने में शिव भक्त जलाभिषेक करने के लिए जिस मार्ग से होकर गुजरते है। उन मार्गो के सड़क किनारे मीट मुर्गा की दुकानों को खोल कर रखा जाता है। जिससे उठने वाली दुर्गंध से शिव भक्तों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। साथ ही उन्होंने बताया कि जिस मार्ग से शिव भक्त गुजरते है उस सड़क किनारे स्थित मीट मुर्गा की दुकानों के पास कूड़ा के रूप में निकलने वाले पंख, खून, हड्डी सड़क के पास या किनारे में भी फेंक देते है जिससे पैदल यात्रा करने वाले शिवभक्त चलने को विवश होते है। ऐसे में मंदिरों के आसपास जगह-जगह मीट की दुकानें खुली होने से उनकी आस्था को ठेस पहुंचती है। इसलिए प्रशासनिक एवं पुलिस अधिकारियों से मांग है कि भावण मास में व्यवस्थाएं दुरुस्त रखने के साथ मंदिरों के आसपास मास मीट की दुकान बंद रखी जाएं और मंदिरों के आसपास मीट की दुकानों का संचालन बन्द होना चाहिए। प्रशासन की अनदेखी के कारण मंदिरों के आसपास मीट की दुकानों का संचालन मानकों के तहत नहीं हो रहा है जबकि मंदिर सभी सनातनीयों की आध्यात्मिक, धार्मिक व सांस्कृतिक चेतना का केन्द्र है। इसलिए सावन माह व प्रत्येक मंगलवार को मीट की दुकानें बन्द होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारा शासन प्रशासन से निवेदन हैं कि मीट की दुकानों का संचालन सार्वजनिक स्थानो के बजाय एक निर्धारित स्थान पर होना चाहिए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023